वार्षिक रिपोर्ट
ANNUAL REPORT
1988–89

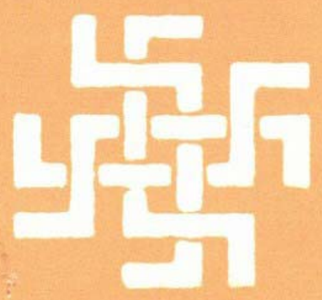

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS
NEW DELHI

वार्षिक रिपोर्ट
1988-89

संकल्पना

श्रीमती इन्दिरा गांधी की स्मृति में स्थापित इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कल्पना एक ऐसे संस्थान के रूप में की गई है जिसमें सभी कलाओं के अध्ययन एवं अनुभव का समावेश हो और कला का प्रत्येक रूप अपना एक अलग अस्तित्व रखते हुए भी पारस्परिक अन्योन्याश्रय की स्थिति में, प्रकृति, सामाजिक संरचना और ब्रह्मांड व्यवस्था के साथ पारस्परिक रूप से संबद्ध हो।

कलाओं के विषय में यह दृष्टिकोण जो मानव संस्कृति के व्यापक परिवेश के साथ अखंड रूप से जुड़ा है, और उसके लिए आवश्यक भी है, श्रीमती गांधी की इस मान्यता पर आधारित है कि कलाओं की भूमिका मनुष्य के लिए व्यक्तिगत रूप में तथा एक सामाजिक प्राणी के रूप में उसके अंतरंग गुणों को विकसित करने के लिए आवश्यक है। यह दृष्टिकोण सम्पूर्ण विश्व को एक समझने की (विश्व बंधुत्व) एवं विश्व की अखंडता की भावना (वसुधैव कुटुम्बकम्) में समाविष्ट है जो भारतीय परंपरा में सर्वत्र मुखरित है और जिस पर महात्मा गांधी तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे आधुनिक भारतीय मनीषियों ने भी बल दिया है।

यहां कलाओं के क्षेत्र को बहुत व्यापक रूप में देखा गया है जिसमें शामिल हैं — लिखित तथा मौखिक रूप में उपलब्ध सर्जनात्मक एवं समीक्षात्मक साहित्य; वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला और रेखाचित्रकला से लेकर सामान्य भौतिक संस्कृति, फोटोग्राफी और फिल्म जैसी दृश्य कलाएं; अपने अधिक से अधिक व्यापक अर्थों में संगीत, नृत्य, नाट्य जैसी प्रदर्शनात्मक कलाएं; और मेलों, उत्सवों तथा जीवन शैली में उपलब्ध वह सब कुछ जो किसी भी दृष्टि से कलात्मक कहा जा सकता हो। प्रारंभ में केन्द्र अपना ध्यान भारत पर ही केंद्रित करेगा, लेकिन आगे चलकर वह अपना क्षेत्र अन्य सभ्यताओं तथा संस्कृतियों तक बढ़ा लेगा। अनुसंधान, प्रकाशन, प्रशिक्षण, सर्जनात्मक कार्यकलाप तथा प्रदर्शन के विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से केंद्र कलाओं को प्राकृतिक तथा मानवीय परिवेश के संदर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेगा। अपने समस्त कार्य में केंद्र का आधारभूत दृष्टिकोण बहुविषयक तथा अंतर्विषयक दोनों प्रकार का होगा। केंद्र निम्नलिखित ठोस उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए स्थापित किया गया है:—

(1) कलाओं, विशेषकर लिखित, मौखिक और दृश्य स्रोत सामग्री के प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करना;

(2) कला, मानविकी और सामान्य सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित संदर्भ ग्रंथों, शब्दावलियों, शब्दकोशों, विश्वकोशों के अनुसंधान और प्रकाशन के कार्यक्रम हाथ में लेना;

(3) सुव्यवस्थित रूप से वैज्ञानिक अध्ययनों और सजीव प्रदर्शनों का आयोजन करने के लिए एक क्रोड संग्रह के साथ-साथ जनजातीय और लोक कला प्रभाग स्थापित करना;

(4) प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों, बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं के माध्यम से विविध परंपरागत तथा समकालीन कलाओं के क्षेत्र में तथा उनके बीच परस्पर सर्जनात्मक एवं समीक्षात्मक संवाद/विचार-विमर्श के लिए एक मंच उपलब्ध कराना;

(5) दर्शन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संबंधी वर्तमान विचारों और कलाओं के बीच संवाद को बढ़ावा देना, ताकि बौद्धिक समझ-बूझ के उस अन्तर को दूर किया जा सके जो अक्सर एक तरफ आधुनिक विज्ञानों और दूसरी तरफ कला तथा संस्कृति अर्थात् परंपरागत कला-कौशल तथा ज्ञान के बीच उत्पन्न हो जाता है;

(6) भारतीय प्रकृति के अनुरूप अनुसंधान कार्यक्रमों तथा कला प्रशासन के लिए माडल तैयार करना;

(7) विविध सामाजिक स्तरों, समुदायों और क्षेत्रों के बीच पारस्परिक क्रियाओं के जटिल ताने-बाने के रचनात्मक तथा गतिशील तत्वों को स्पष्ट करना;

वार्षिक रिपोर्ट
1988-89

संकल्पना

श्रीमती इन्दिरा गांधी की स्मृति में स्थापित इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कल्पना एक ऐसे संस्थान के रूप में की गई है जिसमें सभी कलाओं के अध्ययन एवं अनुभव का समावेश हो और कला का प्रत्येक रूप अपना एक अलग अस्तित्व रखते हुए भी पारस्परिक अन्योन्याश्रय की स्थिति में, प्रकृति, सामाजिक संरचना और ब्रह्मांड व्यवस्था के साथ पारस्परिक रूप से संबद्ध हो।

कलाओं के विषय में यह दृष्टिकोण जो मानव संस्कृति के व्यापक परिवेश के साथ अखंड रूप से जुड़ा है, और उसके लिए आवश्यक भी है, श्रीमती गांधी की इस मान्यता पर आधारित है कि कलाओं की भूमिका मनुष्य के लिए व्यक्तिगत रूप में तथा एक सामाजिक प्राणी के रूप में उसके अंतरंग गुणों को विकसित करने के लिए आवश्यक है। यह दृष्टिकोण सम्पूर्ण विश्व को एक समझने की (विश्व बंधुत्व) एवं विश्व की अखंडता की भावना (वसुधैव कुटुम्बकम्) में समाविष्ट है जो भारतीय परंपरा में सर्वत्र मुखरित है और जिस पर महात्मा गांधी तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे आधुनिक भारतीय मनीषियों ने भी बल दिया है।

यहां कलाओं के क्षेत्र को बहुत व्यापक रूप में देखा गया है जिसमें शामिल हैं — लिखित तथा मौखिक रूप में उपलब्ध सर्जनात्मक एवं समीक्षात्मक साहित्य; वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला और रेखाचित्रकला से लेकर सामान्य भौतिक संस्कृति, फोटोग्राफी और फिल्म जैसी दृश्य कलाएं; अपने अधिक से अधिक व्यापक अर्थों में संगीत, नृत्य, नाट्य जैसी प्रदर्शनात्मक कलाएं; और मेलों, उत्सवों तथा जीवन शैली में उपलब्ध वह सब कुछ जो किसी भी दृष्टि से कलात्मक कहा जा सकता हो। प्रारंभ में केन्द्र अपना ध्यान भारत पर ही केंद्रित करेगा, लेकिन आगे चलकर वह अपना क्षेत्र अन्य सभ्यताओं तथा संस्कृतियों तक बढ़ा लेगा। अनुसंधान, प्रकाशन, प्रशिक्षण, सर्जनात्मक कार्यकलाप तथा प्रदर्शन के विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से केंद्र कलाओं को प्राकृतिक तथा मानवीय परिवेश के संदर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेगा। अपने समस्त कार्य में केंद्र का आधारभूत दृष्टिकोण बहुविषयक तथा अंतर्विषयक दोनों प्रकार का होगा। केंद्र निम्नलिखित ठोस उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए स्थापित किया गया है:—

(1) कलाओं, विशेषकर लिखित, मौखिक और दृश्य स्रोत सामग्री के प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करना;

(2) कला, मानविकी और सामान्य सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित संदर्भ ग्रंथों, शब्दावलियों, शब्दकोशों, विश्वकोशों के अनुसंधान और प्रकाशन के कार्यक्रम हाथ में लेना;

(3) सुव्यवस्थित रूप से वैज्ञानिक अध्ययनों और सजीव प्रदर्शनों का आयोजन करने के लिए एक क्रोड संग्रह के साथ-साथ जनजातीय और लोक कला प्रभाग स्थापित करना;

(4) प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों, बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं के माध्यम से विविध परंपरागत तथा समकालीन कलाओं के क्षेत्र में तथा उनके बीच परस्पर सर्जनात्मक एवं समीक्षात्मक संवाद/विचार-विमर्श के लिए एक मंच उपलब्ध कराना;

(5) दर्शन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संबंधी वर्तमान विचारों और कलाओं के बीच संवाद को बढ़ावा देना, ताकि बौद्धिक समझ-बूझ के उस अन्तर को दूर किया जा सके जो अक्सर एक तरफ आधुनिक विज्ञानों और दूसरी तरफ कला तथा संस्कृति अर्थात् परंपरागत कला-कौशल तथा ज्ञान के बीच उत्पन्न हो जाता है;

(6) भारतीय प्रकृति के अनुरूप अनुसंधान कार्यक्रमों तथा कला प्रशासन के लिए माडल तैयार करना;

(7) विविध सामाजिक स्तरों, समुदायों और क्षेत्रों के बीच पारस्परिक क्रियाओं के जटिल ताने-बाने के रचनात्मक तथा गतिशील तत्वों को स्पष्ट करना;

(8) भारत और विश्व के अन्य भागों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता को बढ़ावा देना;

(9) कला और संस्कृति के अन्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय केन्द्रों के साथ संचार साधनों का विकास करना और कला, मानविकी और सांस्कृतिक धरोहर के संबंध में अनुसंधान कार्य करने और उनको मान्यता प्रदान करने के लिए भारतीय तथा विदेशी विश्वविद्यालयों और अन्य उच्च शिक्षा संस्थाओं के साथ संबंध स्थापित करना।

विशेष कार्यक्रमों तथा परियोजनाओं के माध्यम से कलाओं में अन्योन्याश्रय और कलाओं तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के अन्य रूपों के बीच अन्योन्याश्रय संबंध, विभिन्न क्षेत्रों के बीच परस्पर प्रभाव तथा जनजातीय, ग्रामीण और शहरी तथा लिखित एवं मौखिक परंपराओं के बीच पारस्परिक संबंधों का पता लगाया जाएगा और उनको अभिलिखित तथा प्रस्तुत किया जाएगा।

ढांचा तथा संगठन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की संकल्पनात्मक योजना के अनुसार इसके पांचों प्रभाग संरचनात्मक दृष्टि से स्वायत्त हैं। लेकिन कार्यक्रमों के आयोजन के मामले में परस्पर जुड़े हैं।

इन्दिरा गांधी कला निधि : इसमें (क) मानविकी विषयों तथा कलाओं में अनुसंधान के लिए प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करने के लिए बहुविध संग्रहों से सुसज्जित एवं संदर्भ पुस्तकालय है, जिसे संबल प्रदान करने के लिए (ख) कलाओं, मानविकी विषय तथा सांस्कृतिक परंपराओं (धरोहर) पर एक कम्प्यूटरीकृत राष्ट्रीय सूचना प्रणाली एवं डेटा बैंक है और (ग) सांस्कृतिक अभिलेखागार तथा कलाकारों/विद्वानों के बहुविध व्यक्तिगत संग्रह हैं।

इन्दिरा गांधी कला कोश : यह प्रभाग आधारभूत अनुसंधान कार्य करता है। यह दीर्घकालिक कार्यक्रम आरम्भ करेगा, जिसमें (क) कला और शिल्प की आधारभूत संकल्पनाओं का एक कोश तथा बुनियादी तकनीकी शब्दों का संग्रह और अंतर्विषयक शब्दावलियां, (ख) भारतीय कलाओं के आधारभूत ग्रंथों की श्रृंखला (कलामूलशास्त्र) (ग) भारतीय कलाओं के विषय में समीक्षात्मक कृतियों के पुनर्मुद्रण की श्रृंखला (कला समालोचन), (घ) भारतीय कलाओं का एक बहुखंडीय विश्वकोश सम्मिलित होंगे।

इन्दिरा गांधी जनपद संपदा : यह प्रभाग (क) लोक तथा जनजातीय कलाओं और शिल्पों से संबंधित महत्वपूर्ण सामग्री का संग्रह तथा प्रलेखन करेगा, (ख) बहुविध संचार माध्यमों के जरिए प्रस्तुति करेगा, (ग) जनजातीय समुदायों की बहुविषयक जीवन शैलियों के अध्ययन के लिए व्यवस्था करेगा जिससे कि समग्र भारतीय सांस्कृतिक दृश्य प्रपंच और पर्यावरणात्मक, पारिस्थितिक, कृषि विषयक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक आयामों के ताने-बाने के वैकल्पिक माडल तैयार किए जा सकें, (घ) एक बाल रंगशाला, (ङ) एक प्रयोगात्मक रंगशाला, और (च) एक संरक्षण प्रयोगशाला स्थापित करेगा।

इन्दिरा गांधी कला दर्शन : कला एवं संस्कृति के एकीकृत विषयों तथा संकल्पनाओं पर अंतर्विषयक/अंतर्विधात्मक संगोष्ठियों एवं प्रदर्शनियों के लिए एक मंच की व्यवस्था करता है। इसके भवनों में तीन रंगशालाएं (थियेटर) और बड़ी दीर्घाएं होंगी।

सूत्रधार : अन्य सभी प्रभागों को प्रशासनिक, प्रबन्धकीय और संगठनात्मक सहायता तथा सेवाएं प्रदान करना है।

संस्था के अकादमिक प्रभाग अर्थात् कला निधि तथा कला कोश अपना ध्यान प्रमुख रूप से बहुविध प्राथमिक एवं गौण सामग्री के संग्रह पर लगाएंगे, आधारभूत संकल्पनाओं की खोज करेंगे, रूप से सिद्धान्तों का पता लगाएंगे और पारिभाषिक शब्दावलियों को स्पष्ट करेंगे। वे यह कार्य सिद्धान्त और पाठ (शास्त्र) और बौद्धिक चर्चा (विमर्श) और निर्वचन (मार्ग) के स्तर पर करेंगे। दो अन्य प्रभाग लोक, देश तथा जन के स्तर पर अभिव्यक्ति, प्रक्रिया, जीवन कार्य तथा जीवन शैली, मौखिक परंपराओं पर ध्यान देंगे। सभी चारों प्रभागों के कार्यक्रम सम्मिलित रूप से कलाओं को उनके जीवन तथा अन्य विषय संबंधी मूल संदर्भों में प्रस्तुत करेंगे।

प्रत्येक प्रभाग में अनुसंधान करने, कार्यक्रम बनाने और अन्तिम निष्कर्ष निकालने की रीतियां एक जैसी हैं। हर प्रभाग का कार्य दूसरे प्रभागों के कार्यक्रमों का पूरक सिद्ध होगा।

न्यास का निर्माण :

भारत सरकार ने अपने दिनांक 19 मार्च, 1987 के संकल्प संख्या फा. 16-7/86-कला के द्वारा यह निर्णय लिया कि इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पूर्णतः स्वायत्त न्यास होगा, जिसका नाम "इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास" होगा।

उपर्युक्त संकल्प के अनुसार उसके पहले न्यासी (ट्रस्टी) हैं: —

1. श्री राजीव गांधी, — न्यास अध्यक्ष
   7, रेसकोर्स रोड,
   नई दिल्ली
2. श्री रा. वेंकटरामन,
   6, मौलाना आजाद रोड,
   नई दिल्ली
3. श्री पी.वी. नरसिंहराव,
   9, मोतीलाल नेहरू मार्ग,
   नई दिल्ली
4. वित्त मंत्री
   भारत सरकार (पदेन)
5. श्रीमती पुपुल जयकर,
   11, सफदरजंग रोड,
   नई दिल्ली
6. श्री एच.वाई. शारदा प्रसाद,
   सी.1/1, लोदी गार्डन,
   नई दिल्ली
7. डा. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन, — सदस्य सचिव, न्यास
   डी.1/23, सत्य मार्ग,
   नई दिल्ली

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास का 24 मार्च, 1987 को उप-पंजीयक, नई दिल्ली के यहां उनकी अतिरिक्त पुस्तक संख्या IV, खण्ड संख्या 1369 में पृष्ठ संख्या 42-60 पर विधिवत पंजीयन हुआ और उसकी पंजीयन संख्या 1680 है।

भारत सरकार ने अपनी दिनांक 1 फरवरी, 1989 की अधिसूचना संख्या फा. 5-2/89-कला के द्वारा निम्नलिखित दो और व्यक्तियों को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के न्यास के न्यासी के रूप में नियुक्त किया: —

1. श्रीमती एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी,
   4, टैंक रोड, कलाक्षेत्र, मद्रास
2. श्री आबिद हुसैन,
   ए.बी.-7, पंडारा रोड, नई दिल्ली

भारत सरकार ने अपने दिनांक 19 मार्च, 1987 के संकल्प संख्या एफ 16-7/86 कला के द्वारा निम्नलिखित व्यक्तियों के

साथ पहली कार्यकारी समिति नियुक्त की: —

1. श्री पी.वी. नरसिंहराव, अध्यक्ष
   न्यास सदस्य
2. वित्त मंत्री, भारत सरकार (पदेन)
   न्यास सदस्य
3. श्री एच.वाई. शारदा प्रसाद,
   न्यास सदस्य
4. श्री आबिद हुसैन,
   न्यास सदस्य
5. श्री पी.सी. एलेग्जेंडर,
   पडिजारे थलक्कल, मवेलिकारा, केरल
6. डा. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन,
   सदस्य सचिव, न्यास

कार्यक्रम तथा कार्यकलाप

अपनी कार्यशीलता के इस दूसरे वर्ष में केन्द्र के सामने पहला काम था अपनी संकल्पनात्मक योजना को परस्पर संबद्ध कार्यक्रमों के साथ अलग-अलग प्रभागों के अन्तर्गत मूर्तरूप देना। सितम्बर, 1988 तक, प्रत्येक कार्यक्रम तथा उपकार्यक्रम के अन्तर्गत पांच से दस वर्ष की अवधि के लिए परियोजनाओं की रूपरेखा तैयार कर ली गई। संलग्न चार्टों में प्रत्येक प्रभाग के दीर्घकालिक कार्यक्रमों तथा संस्था के आड़े व खड़े ढांचे का ब्यौरा दिया गया है। संस्था की संकल्पनात्मक योजना, कार्यक्रमों एवं परियोजनाओं और ढांचे की रूपरेखा भारत में तथा विदेशों में स्थित प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों, दार्शनिकों और कलामर्मज्ञों, इतिहासवेत्ताओं को भेज दी गई है, जिसके संबंध में इनके विख्यात वैज्ञानिकों, दार्शनिकों एवं कलामर्मज्ञों से प्रशंसात्मक एवं उत्साहवर्द्धक उत्तर प्राप्त हुए हैं। प्रत्युत्तरदाताओं में महामहोपाध्याय लक्ष्मण शास्त्री जोशी से लेकर स्टेला क्रैमरिश तक अनेक मनीषी सम्मिलित हैं। स्टेला क्रैमरिश के पत्र में और भी कई महानुभावों के विचार शामित हैं:

"फिलाडेल्फिया कला संग्रहालय

19 जनवरी, 1989

आपके द्वारा कृपापूर्वक भेजी गई पुस्तिका में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के व्यापक कार्यक्रमों और संगठन की जो अद्भुत झांकी प्रस्तुत की गई है उसे देखकर मैं अभिभूत हुए बिना नहीं रह सकी। मेरे विचार से यही वह क्षण है जब सृजनशीलता की एक नई दृष्टि उत्पन्न हुई है। आपकी समग्र योजना बहुत ही स्पष्ट एवं सांगोपांग है। किसी भी कला विद्या का कोई भी आयाम, कोई भी क्षेत्र अछूता अलग-थलग नहीं छोड़ा गया है। प्रत्येक विधा अपने आप में सर्जनात्मक अनुभव और उसके रूप के समग्र भण्डार को खोलने की कुंजी है। आपने भारत के लिए जो अकल्पनीय सेवा की है, प्रत्येक सभ्यता को उसकी आवश्यकता है ताकि समग्र विश्व एक आंतरिक जीवन और चेतना का ब्रह्माण्ड बन जाए।

अब से भारतीय कला का अध्ययन एक नए ब्रह्मांड का, अपने समस्त पक्षों से अवगत चेतना का सच्चा विषय बन जाएगा। सर्जनात्मक जीवन के ढांचे के प्रत्येक पक्ष को हर दूसरे पक्ष से अलग करके उसके अपने स्थान और संदर्भ में स्पष्टतः सीमित कर दिया है। आपके कार्य की योजना में उन सभी उपकरणों की व्यवस्था की गई है जो चेतना के इस नए क्षेत्र में शुद्धता को सुनिश्चित करेंगे। अब तक विद्वानों ने अपने-अपने क्षेत्र में जो भी प्रयत्न किए हैं वे सब उसी स्पष्टता को टटोल रहे थे जो आपने प्राप्त की है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के इस कार्य से एक नए पक्ष की ही नहीं, अपितु अनुभूति के एक एकदम नए ब्रह्माण्ड की सृष्टि हो गई है।

शुभकामनाओं के साथ
अभिन्न
ह./-
स्टेला क्रैमरिश
भारतीय कला की अवकाश-प्राप्त संग्रहाध्यक्ष''

संदर्भ पुस्तकालय की विशिष्टता माइक्रोफिल्मों और माइक्रोफिशों का विस्तार, प्रतिलिपिकरण (रिप्रोग्राफी) कार्यक्रम, विकसित डेटाबेस की नवीनताओं के बारे में व्यापक रूप से विचार व्यक्त किए गए हैं।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को भारत सरकार द्वारा कलाओं, मानविकी विषयों और सांस्कृतिक धरोहर के क्षेत्रों में कम्प्यूटर द्वारा सूचना के समाकलन के लिए, एक धुरी अभिकरण (नोडल एजेंसी) के रूप में मान्यता मिल गई है। सरकार के सभी विभागों को निर्देश दे दिए गए हैं कि वे इन विषयों से संबंधित सभी आंकडे व तथ्य (डेटा) मानक फार्मों में केन्द्र के पास भेज दें।

दो से भी कम वर्षों में संस्था ने आठ गंभीर अनुसंधान प्रकाशन जारी कर दिए हैं। प्रत्येक प्रकाशन को एक मार्ग अन्वेषक की सी मान्यता मिली है। पारिभाषिक शब्दों के कोश को भारतीय विश्व दृष्टिकोण के मूल में व्याप्त साकल्यवादी पद्धति को प्रकट करने का प्रथम प्रयास माना गया है। प्राथमिक आधारभूत ग्रंथों (कलामूलशास्त्र) के द्विभाषी रूप में मुद्रित पहले दो खंडों से एक श्रृंखला का श्रीगणेश हुआ है जो हारवर्ड ओरिएंटल सिरीज की बराबरी की होगी। आनन्द कुमारस्वामी के चुने हुए पत्र, राम तेजंड एण्ड राम रिलीफ्स, सहस्त्रभुज अवलोकितेश्वर (थाउजंड आर्म्ड अवलोकितेश्वर) से केन्द्र के कार्यक्रमों के उदार स्वरूप का पता चलता है। सैयद हुसैन नस्र द्वारा लिखित इस्लामिक आर्ट एण्ड स्पिरिच्युअलिटी (इस्लामी कला तथा आध्यात्मिकता) को 1989-90 में प्रकाशित करने की योजना है।

लोक परंपरा एवं क्षेत्र संपदा नामक जीवन शैली अध्ययन कार्यक्रम तथा क्षेत्र अध्ययन कार्यक्रम ने जिगीषा के एक नए पक्ष का विकास किया है जिसे प्राप्त करने का मार्ग अन्तरसांस्कृतिक तथा बहुविषयक है। भारत के संपूर्ण सांस्कृतिक प्रपंच का अध्ययन करने के लिए एक वैकल्पिक मॉडल अन्तर्राष्ट्रीय अध्येता समाज के सामने प्रस्तुत किया गया है और इससे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक सजीव वाद-विवाद छिड़ गया है। यूनेस्को ने केन्द्र के कार्यक्रमों के महत्त्व को स्वीकार किया है और उसे एक क्षेत्रीय संस्था के रूप में मान्यता दी है। बहुविध कम्प्यूटरीय प्रलेखन के साथ अन्तरसांस्कृतिक जीवन शैली अध्ययन पर एक अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला यूनेस्को के तत्वावधान में आयोजित की गई जिसमें वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीविद, मानव विज्ञानी, कुशल प्रणालियों के कम्प्यूटर विशेषज्ञ उपस्थित हुए और उन्होंने लाभदायक विचार-विमर्श किया। केन्द्र की संगोष्ठी तथा प्रदर्शनी को एक विशिष्ट स्वरूप प्राप्त हो गया है। ऐसे प्रत्येक कार्यक्रम में केन्द्र की बहुविषयक बहुमाध्यमिक, अन्तरसांस्कृतिक विधि की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। 1986 में आकाश (दिक्) विषय पर ''खं'' नामक प्रदर्शनी और 1988 में सुलेख विषय पर ''आकार'' नामक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। केन्द्र के अस्तित्व के प्रथम दो वर्षों ने यह प्रमाणित कर दिया है कि उसमें अपने विशिष्ट कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने की क्षमता है।

केन्द्र के कार्यकलापों की पहली वार्षिक रिपोर्ट 1987-88 के संबंध में प्रकाशित हुई थी। यह दूसरी वार्षिक रिपोर्ट है और यह 1 अप्रैल, 1988 से 31 मार्च, 1989 तक की अवधि के लिए है।

I कला निधि

कार्यक्रम क : संदर्भ पुस्तकालय

(i) मुद्रित पुस्तकें

मुद्रित सामग्री का एक संदर्भ पुस्तकालय स्थापित किया गया है। इसके पास बहुत तरह की संदर्भ सामग्री है, जैसे विश्वकोश, सूचियां, मूल पाठ (पुस्तकें)। यह भारत तथा बाहर से भी सामग्री प्राप्त करता है। इसने दुलर्भ ग्रंथों का एक विशेष संग्रह किया है। इसके पास सुनीति कुमार चटर्जी (20,000 पुस्तकें, लगभग 20 भाषाओं में), हजारी प्रसाद द्विवेदी (15,000 पुस्तकें), ठाकुर जयदेव सिंह (1200 पुस्तकें) कृष्ण कृपलानी (1500 पुस्तकें) और नसली एलिस हीरामानेक के व्यक्तिगत संग्रह हैं। यह इस पुस्तकालय की उल्लेखनीय विशेषता है।

वर्ष के दौरान, इन संग्रहों की जिल्दसाजी, सूचियां तथा सूचक बनवाने और उन्हें उपयोग के लिए तैयार करने का संगठित प्रयास किया गया। एक कम्प्यूटरीकृत सूची विकसित कर ली गई है और दो वर्ष से कम समय में इसका उपयोग किया जाने लगा है। लगभग 60,000 पुस्तकों का एक पुस्तकालय स्थापित किया गया है। फरवरी, 1989 में इस पुस्तकालय का औपचारिक रूप से उद्घाटन किया गया और अब भारत और विदेशों के अध्येता इसका उपयोग कर रहे हैं।

(ii) माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश संग्रह

पुस्तकालय अपने यहां भारतीय एवं एशियाई मूल की उस शाब्दिक तथा चित्रात्मक प्राथमिक सामग्री की माइक्रोफिल्में/माइक्रोफिशों का विशाल संग्रह करना चाहता है जो (सामग्री) भारत और विदेशों के पुस्तकालयों तथा व्यक्तिगत संग्रहों में बिखरी पड़ी है।

विदेशों से अर्जन (प्राप्ति)

केन्द्र ने प्रमुख विदेशी संस्थाओं से माइक्रोफिल्में और अन्य रिप्रोग्राफिक सामग्री प्राप्त करने के लिए सफलतापूर्वक बातचीत की। इसके लिए द्विपक्षीय करार करने की जरूरत पड़ी। वर्ष के दौरान, केन्द्र ने स्तास बिब्लियोथिक, बर्लिन, पश्चिम जर्मनी, बिब्लियोथिक नेशनल, पेरिस, फ्रांस, ब्रिटिश लाइब्रेरी, यूनाइटेड किंगडम के साथ करार किए हैं। पहली खेप मई, 1989 में प्राप्त हो जायेगी। इटली, सोवियत रूस, इंडोनेशिया, मलेशिया, थाईलैंड, जापान, चीन और आस्ट्रेलिया की संस्थाओं के साथ बातचीत चल रही है।

भारत से माइक्रोफिल्में

भारत में पहली बार चयनात्मक आधार पर कुछ ऐसे बड़े पुस्तकालयों में जिनके पास पांडुलिपियों के बहुमूल्य संग्रह हैं, माइक्रोफिल्म एकत्र स्थापित करने का अखिल भारतीय कार्यक्रम बनाया गया।

इस संबंध में राज्य सरकारों, विषय विशेषज्ञों, तकनीशियनों तथा कम्प्यूटर विशेषज्ञों के साथ, तत्काल सूची बनाने, संरक्षण करने तथा माइक्रोफिल्म तैयार करने के लिए बातचीत करना जरूरी था। वर्ष के दौरान निम्नलिखित पुस्तकालयों के संग्रह की माइक्रोफिश तैयार करने की योजना बनाई गई।

तमिलनाडु

गवर्नमेंट ओरिएंटल लाइब्रेरी, मद्रास; यू.ए. स्वामिनाथ लाइब्रेरी, मद्रास; तंजोर एस. सरस्वती महल लाइब्रेरी।

केरल

त्रिवेन्द्रम ओरिएंटल लाइब्रेरी, केरल विश्वविद्यालय, संस्कृत कॉलेज तिरूपंथर

उत्तर प्रदेश

वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

महाराष्ट्र

भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, वैदिक संशोधन मंडल, प्राज्ञ पाठशाला, पुणे।

गुजरात

गुजरात इतिहास सोसाइटी और एल.डी. इंस्टीट्यूट।

मणिपुर

गुरु अतोमबापू शर्मा अनुसंधान केन्द्र, मणिपुर अकादमी, इम्फाल।

उपर्युक्त तथा अन्य पुस्तकालयों में से गवर्नमेंट ओरिएंटल लाइब्रेरी, मद्रास, भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, वैदिक संशोधन मंडल, केरल ओरिएंटल लाइब्रेरी और वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय में माइक्रोफिल्में तथा सूचियां बनाने का दीर्घकालिक कार्यक्रम 1989 में पूरी तरह चालू हो जाएगा। इन पुस्तकालयों में यह कार्य समाप्त होने में पांच से दस वर्ष तक का समय लग जाएगा। जैसा कि सुविदित है, वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के पास लगभग 1,20 लाख पांडुलिपियां हैं और गवर्नमेंट ओरिएंटल मैन्युस्क्रिप्ट लाइब्रेरी के पास लगभग 98,000। इसके साथ ही खुदाबख्श लाइब्रेरी देइरात-उल-मारिंजत, रामपुर रजा लाइब्रेरी और अन्य पुस्तकालयों के पास मौजूद बड़े संग्रहों की माइक्रोफिल्में तैयार करने के लिए बातचीत शुरू की जा रही है। केन्द्र के कार्यालय में भी माइक्रोफिल्में तैयार करने का काम शुरू करने के लिए साज-सामान खरीदा गया। एक माइक्रोफिल्म और माइक्रोफिश रीडर प्रिंटर (पाठक मुद्रक) जो फिल्मों के प्रतिबिंब को बड़ा कर सकता है और उनकी प्रतियां छाप सकता है, भी खरीदा गया है।

(iii) स्लाइड संग्रह

दक्षिण एशियाई कलाओं की अमेरिकी समिति ने भारतीय कला संबंधी 6,298 स्लाइडें भेंट की हैं। कलाओं तथा सांस्कृतिक धरोहर के भारतीय राष्ट्रीय न्यास ने चेस्टर बेट्टी की 3000 से अधिक स्लाइडें उपलब्ध कराई। इससे पहले लगभग 100 स्लाइडें बर्लिन म्यूजियम से और 214 स्लाइडें यूगोस्लाविया से प्राप्त हुई। इटली, इंडोनेशिया, जापान और चीन से भारतीय और एशियाई कला वस्तुओं और सचित्र पांडुलिपियों की स्लाइडें प्राप्त करने के लिए चल रही बातचीत समाप्ति की विभिन्न अवस्थाओं में है।

(iv) पत्रिकाएं

पुस्तकालय में इस समय भारत-विद्या, धर्म, इतिहास, दर्शन, पुरातत्व, मानव विज्ञान और कला तथा संस्कृति विषयक लगभग 300 पत्र-पत्रिकाएं आती हैं।

(v) कम्प्यूटरीकृत सूची

पुस्तकालय की पुस्तकें आदि के बारे में सूचना संग्रह तथा पुनः प्राप्ति के प्रयोजन से कम्प्यूटर में भर दी गई है। उपयोगकर्ता कम्प्यूटर टर्मिनल के माध्यम से अपेक्षित सूचना प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार लेखक, विषय, नाम, श्रृंखला आदि का पता हो तो उपयोगकर्ता द्वारा अपेक्षित सारी सूचना उसे पुस्तकालय में उपलब्ध विषय पर तुरन्त मिल सकती है।

कार्यक्रम ख : राष्ट्रीय सूचना प्रणाली तथा डेटा बैंक

कलाओं, मानविकी विषयों और भारत की सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित राष्ट्रीय सूचना प्रणाली तथा डेटा बैंक कला निधि का दूसरा भाग है। यह राष्ट्रीय सूचना केन्द्र (एन.आई.सी.) के सक्रिय सहयोग और सहायता से गठित किया गया है। राष्ट्रीय डेटा बैंक बहुविध संग्रह तथा पुनःप्राप्ति की प्रणालियों के माध्यम से कलाओं तथा सांस्कृतिक धरोहर के सभी पक्षों पर सूचना के कम्प्यूटरीकृत संग्रहण, पुनःप्राप्ति और वितरण की व्यवस्था करेगा। यह भारत में स्थित संयोजित संस्थाओं और प्रत्येक प्रभाग के कार्यक्रमों को संबल प्रदान करेगा और अनुसंधान तथा विकास संबंधी परियोजनाएं अपने हाथ में लेगा।

इसके कार्यक्रम आगे इस प्रकार विभाजित हैं:-

1. डेटा बेस का विकास
2. हार्डवेयर तथा सॉफ्टवेयर
3. कलाओं और मानविकी विषयों पर राष्ट्रीय डेटा बैंक के लिए नोडल एजेंसी।
4. अनुसंधान तथा विकास की परियोजनाएं।

(i) डेटाबेस

कला निधि

1. **पुस्तकालय सूचना प्रणाली:** इसमें केन्द्र के पुस्तकालय में उपलब्ध सभी पुस्तकों और पत्रिकाओं के बारे में सूचना को सूची बनाने का काम शामिल है।

2. **सूचियों की संघ सूची (कैट-कैट):** इस डेटाबेस से प्रकाशित/अप्रकाशित पांडुलिपियों की हजारों सूचियों (कैटलॉग) के बारे में जानकारी मिलती है। 700 सूचियों के बारे में जानकारी कम्प्यूटर में भर ली गई है। प्रकाशित/अप्रकाशित सामग्री से संबंधित विषयों पर डेटा अब नाम, सूची, भारत या विदेशों के पांडुलिपि संग्रहों की सहायता से प्राप्त किए जा सकते हैं। डेटा को अद्यतन बनाने के लिए अन्य 500 सूचियों की छानबीन (स्कैनिंग) की जा रही है।

3. **पांडुलिपियां (मैनुस)** गीत गोविन्द, मेघदूत और नाट्यशास्त्र की लगभग 300 पांडुलिपियों के बारे में संपूर्ण वर्णनात्मक सूचना प्रायोगिक आधार पर, कम्प्यूटरीकृत की गई है। इससे विभिन्न लिपियों में उपलब्ध पाठों के एक समान रूप तथा टीकाओं के भिन्न रूप का पता चलता है। निर्धारित किए गए संस्कृत के 84 आधारभूत ग्रंथों की सभी उपलब्ध पांडुलिपियों के बारे में वर्णनात्मक सूचना कम्प्यूटरीकृत की जा रही है जो कला कोश आधारभूत ग्रंथ श्रृंखला की योजना के अन्तर्गत तैयार किए जाने वाले समीक्षात्मक संस्करणों के लिए पांडुलिपियों का पाठ-भेद दर्शाने के लिए आधार का काम देगी।

4. **कलावस्तु (पिक्टो)** इस डेटाबेस में दो-आयामी (2 डी) और तीन-आयामी (3 डी) कलावस्तुओं के विषय में सूचना शामिल है। फिलहाल एलिजाबेथ ब्रूनर की चित्रकारियों और श्री एस. कृष्णस्वामी के संग्रह के वाद्ययंत्रों, जो इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के पास उपलब्ध हैं, को कम्प्यूटरीकृत किया गया है।

5. **ध्वनि रेकार्ड (साउंड)** इसमें सामवेद की राणायणीय और जैमिनीय शाखा और अथर्ववेद की पैप्पलाद शाखा आदि के वैदिक मंत्रों के सस्वर पाठ के बारे में सूचना शामिल है। सांस्कृतिक अभिलेखागार के संगीत संग्रहों अर्थात् कर्नाटक संगीत पर नटराजन के संग्रह और संगीत वाद्यों पर एस. कृष्णस्वामी के संग्रह के बारे में डेटाबेस विकसित किए जा चुके हैं।

कला कोश

कला कोश परिभाषिक शब्द डेटाबेस (केकेटर्म) कलातत्व कोश की परियोजना के लिए डेटाबेस विकसित कर लिया गया है। इस परियोजना के अन्तर्गत 250 पारिभाषिक शब्द कलातत्व कोश में शामिल करने के लिए छांटे गए हैं। प्रारंभिक अवस्था में, 12 चुने हुए शब्दों से संबंधित डेटा को कम्प्यूटरोपयोगी बनाया गया है।

कला दर्शन

'खं' प्रदर्शनी में प्रदर्शित वस्तुएं: इसमें केन्द्र द्वारा 1986 में आयोजित 'खं' प्रदर्शनी में प्रदर्शित सभी वस्तुओं के बारे में सूचना सम्मिलित की गई है।

सूत्रधार

प्रबन्ध सूचना प्रणाली: इस प्रणाली में केन्द्र के कार्यकलापों में सहयोजित साधन-सम्पन्न व्यक्तियों, डाक अनुवीक्षण, फाइल अनुवीक्षण और कलाओं तथा सांस्कृतिक परियोजनाओं से संबंधित डेटाबेस शामिल हैं।

(ii) हार्डवेयर/सॉफ्टवेयर

हार्डवेयर

1. एच.पी. 3000/42 प्रणाली, आई.एम.बी. मेमोरी सहित 2×132 एम.बी. डिस्क ड्राइव। एक 1600 बी.पी.आई. का 9 ट्रैक वाला टेप ड्राइव। एक 300 आई.एम.बी. लाइनप्रिंटर 7 टर्मिनलों के साथ। एच.पी. 150 पी.सी. पी 2 टचस्क्रीन के साथ। कलरप्लॉटर और एक प्रिंटर।
2. एक पी.सी./एक्स.टी. डॉट-मैट्रिक्स प्रिंटर के साथ डायलअप मॉडिम के जरिए एन.ई.सी.एस. 1000 प्रणाली के साथ संबद्ध।
3. एक सुपर पी.सी./एक्स.टी. (386 आधारित) 10 टर्मिनल के साथ।
4. एक पी.सी./एक्स.टी. 20 एम.बी. विंचेस्टर डिस्क के साथ
5. एक पी.सी./एक्स.टी. टर्मिनल एच.पी. 3000 को, डॉटमैट्रिक्स प्रिंटर के साथ, और एक पी.सी./एक्स.टी. और दो पी.सी. डॉटमैट्रिक्स प्रिंटरों के साथ।

सॉफ्टवेयर

1. मिनिसिस-डी.बी.एम.एस. पैकेज एच.पी. 3000 पर।
2. इमेज-डी.बी.एम.एस. पैकेज एच.पी. 3000 पर।
3. सी.डी.एस.-आई.एस.आई.एस.-डी.बी.एम.एस. पैकेज पी.सी. कांपीटिबल सिस्टम पर।
4. डी. बेस-III प्लस, फॉक्सबेस प्लस, पी.सी. फोकस और यूनीफाई-डी.बी.एम.एस. पैकेज पी.सी. कांपीटिबल सिस्टम पर।
5. माइक्रो सॉफ्टवेयर बर्ड, वर्ड परफैक्ट, वर्डस्टार-वर्ड प्रोसेसिंग पैकेज।
6. लॉटस 1-2-3 और फ्रेमवर्क-स्प्रेडशीट पैकेज।
7. माइक्रोसॉफ्ट चार्ट, इमेजिन, टैट और ड्राइंग गैलरी, ग्राफिक्स पैकेज।

(iii) कला और सांस्कृतिक धरोहर के राष्ट्रीय डेटा बैंक के लिए नोडल एजेंसी

वर्ष के दौरान, भारत सरकार ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को कला, मानविकी तथा सांस्कृतिक धरोहर के राष्ट्रीय डेटा बैंक की स्थापना से संबंधित सभी मामलों के लिए एक नोडल एजेंसी के रूप में नामित किया। कला मानविकी और राष्ट्रीय धरोहर के संबंध में डेटा के संग्रह, पुनः प्राप्ति तथा वितरण के प्रयोजन के लिए केन्द्र तथा राज्य सरकारों के अन्तर्गत स्थापित सभी अभिकरणों के लिए हार्डवेयर तथा सॉफ्टवेयर संबंधी अपेक्षाओं सहित तकनीकी मानक निर्धारित किए जाएंगे, ताकि इस क्षेत्र में एक राष्ट्रीय तंत्र (नेटवर्क) का विकास किया जा सके। साथ ही केन्द्र को यह अधिकार भी दे दिया गया है कि वह कला, मानविकी तथा सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित सभी डेटा और सूचना केन्द्र द्वारा निर्धारित फार्मों पर अनिवार्य रूप से केन्द्र को भेजने के लिए केन्द्रीय सरकार के सभी विभागों को समुचित निर्देश जारी करे और राज्य सरकारों को इस संबंध में उनकी एजेंसियों का सहयोग दिलाने के लिए कहे।

केन्द्र ने राष्ट्रीय डेटा बैंक संगठित करने के लिए तकनीकी तथा प्रशासनिक पहलुओं के संबंध में अन्तर विभागीय और अन्तरअधिकरण आयोजन, समन्वय तथा एकीकरण से संबंधित निर्णय को कार्यान्वित करने के लिए भी कदम उठाए हैं।

केन्द्र को नोडल एजेंसी के रूप में रखकर, राष्ट्रीय सूचना केन्द्र के नेटवर्क (निकनेट) के माध्यम से सभी सांस्कृतिक संस्थाओं का विश्वसनीय कम्प्यूटर नेटवर्क स्थापित करने की कल्पना की जा रही है। राष्ट्रीय सूचना केन्द्र के महानिदेशक की अध्यक्षता में एक स्थायी तकनीकी समूह गठित किया गया है जो ऐसी प्रणाली के लिए हार्डवेयर तथा सॉफ्टवेयर के विषय में केन्द्र को सलाह देगा।

स्थायी तकनीकी समूह के एक अध्ययन दल ने आवश्यक उपस्कर की जानकारी प्राप्त करने के लिए जापान में टोकियो के कम्प्यूटर निर्माताओं से भेंट की और ओसाका के राष्ट्रीय मानव जाति विज्ञान संग्रहालय का दौरा किया।

(iv) अनुसंधान और विकास की परियोजनाएं

1. **यूजर फ्रेंडली क्वेरी इंटरफेस:** इंटरएक्टिव डिस्प्ले फार्मेट की सुविधा के साथ मिनिसिस का एक क्वेरी इंटरफेस विकसित कर लिया गया है। उच्चारण निर्देशी चिन्हों के साथ रोमन लिपि के अक्षरों के संग्रहण और पुनःप्राप्ति तथा देवनागरी लिपि के डेटा की सुविधा भी विकसित कर ली गई है जो आगे अन्य भारतीय लिपियों के लिए भी उपयोग में लाई जा सकेगी।

2. **बिम्ब संग्रहण एवं पुनःप्राप्ति प्रणाली:** कला वस्तुओं के बिम्ब संग्रहण और पुनःप्राप्ति की परियोजना बनाने का काम प्रगति पर है। इसके लिए विश्वभर में इसी तरह के कार्य में संलग्न संस्थाओं के साथ संपर्क स्थापित किया गया है। इसके बाद बिम्ब विश्लेषण एवं संसाधन की क्षमताएं डिजिटल फार्मेट पर विकसित की जाएंगी।

3. **डेस्कटॉप प्रकाशन प्रणाली:** देवनागरी लिपि के लिए पी.सी. पर आधारित डेस्कटॉप प्रकाशन प्रणाली विकसित की जा रही है जो आगे चलकर अन्य भारतीय लिपियों के लिए भी अपनाई जाएगी। यह परियोजना विकास के लिए राष्ट्रीय सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकी केन्द्र को सौंपी गई है और सम्पन्न होने वाली है।

4. **पाठ विश्लेषण उपकरण:** प्रतिष्ठित भाषाविदों और कम्प्यूटर विशेषज्ञों की एक समिति भारतीय लिपियों में लिप्यंतरण के नियमों को अंतिम रूप दे रही है। अब तक सभी कम्प्यूटरों और कुंजी पटलकों (द्विभाषी या त्रिभाषी) में बहुभाषी सुविधाएं विकसित की जा चुकी हैं और रोमन लिपि उनका तर्कसंगत आधार है। एक अन्य ध्वनि पद्धति, जो शुद्ध व्यंजनों पर आधारित है और देवनागरी जिसका आधार है, विचाराधीन है। यदि इस दिशा में सफलता मिली तो यह एक बहुत बड़ी बात होगी। केन्द्र अपने अनुसंधान तथा विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत इसे पाणिनीय व्याकरण के मूलभूत ध्वनि नियमों और देवनागरी के आधार पर तैयार करेगा।

कार्यक्रम ग : सांस्कृतिक अभिलेखागार

कला निधि पुस्तकालय का तीसरा अनुभाग है — सांस्कृतिक अभिलेखागार। यह उन विद्वानों तथा कलाकारों के व्यक्तिगत संग्रहों को इकट्ठा करता है, उनकी सूचियां बनाता है, वर्गीकरण करता है और उन्हें प्रदर्शित करेगा जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन अपनी रुचि के क्षेत्र या विषय विशेष में सामग्री संग्रहण के कार्य को समर्पित कर दिया है।

अभिलेखागार छः अनुभागों में विभक्त है:-(i) साहित्य, (ii) वास्तुशिल्प,(iii) छाया पट,(iv) संगीत,(v) नृत्य और (vi) नाट्य।

प्रत्येक संग्रह को संग्रहकर्ता विद्वान/कलाकार के नाम में एक अलग अस्तित्व के साथ रखा जाता है, हालांकि कई संग्रहों में श्रव्य/दृश्य प्रतिकृतियां, पुस्तकें तथा दो या तीन आयामों वाली कला वस्तुएं भी हो सकती है। इस प्रकार सांस्कृतिक अभिलेखागार देश की संस्कृति को विभिन्न धाराओं को एक संपुटिका (कैप्सूल) रूप में प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है, चाहे वे फोटोग्राफों, श्रव्य टेपों अथवा मूल कला वस्तुओं के रूप में हों।

अभिलेखागार में प्राप्त किए गए या किए जा रहे अत्यन्त प्रतिष्ठापूर्ण संग्रहों में कुछ ये हैं:-

(i) साहित्य

डा. रणवीर रंगा संग्रह, जिसमें भारत के 92 लेखकों की भेंटवार्ताओं के श्रव्य टेप हैं जो हिन्दी में ही नहीं बल्कि भारत की अधिकांश भाषाओं में हैं।

(ii) छाया पट (फोटोग्राफ)

कारटियर ब्रेसों संग्रह, जिसमें 107 फोटोग्राफ हैं शीघ्र ही अभिलेखागार का अंग बन जाएगा। भारतीय संदर्भ में इस संग्रह का बड़ा ऐतिहासिक महत्व है क्योंकि कारटियर ब्रेसों ने कंसर्नड् फोटोग्राफर्स मूवमेंट (चिंतित फोटोग्राफ आन्दोलन) के अग्रणी के रूप में देश में स्वतंत्रता संग्राम की घटनाओं के निष्पक्ष फोटो लिए थे।

राजा लाता दीनदयाल संग्रह, जिसमें फोटोग्राफ और उनके ग्लासप्लेट निगेटिव हैं, प्राप्त किया जा रहा है।

(iii) संगीत

एस. कृष्णस्वामी संग्रह: इस विशाल संग्रह में 554 फोटोग्राफ, 1304 निगेटिव, 784 स्लाइडें और 64 रेखाचित्र हैं जो भारत के संगीत वाद्यों के विषय पर हैं और 30 वर्ष की अवधि में संकलित किए गए हैं। इस संग्रह में श्री कृष्णस्वामी की शोध टिप्पणियां तथा श्रव्य टेपों पर लगभग 30 घण्टे का संगीत भी है।

(iv) नृत्य

मोहन खोकर संग्रह: मोहन खोकर का दुर्लभ संग्रह पांचवें दशक के प्रारंभिक वर्षों से संबंधित है। इसमें शास्त्रीय, लोक एवं जनजातीय किस्म के नृत्यों/नर्तकों के श्याम-श्वेत निगेटिव और रंगीन पारदर्शियों के अलावा भारतीय नृत्य के विषय में पुस्तकें, चित्रकारियां, खिलौने, लघुमूर्तियां, वस्त्र आदि हैं। संग्रह में भारतीय नृत्य की असंख्य मुद्राएं दिखाई गई हैं। इस संग्रह में फाइल टिप्पणियां, व्यक्तिगत भेंटवार्ताओं के श्रव्य टेप, भारतीय नृत्य के विख्यात विद्वानों, गुरुओं तथा कलाकारों के साथ हुआ व्यक्तिगत पत्र-व्यवहार भी संकलित है। इस संग्रह के संवर्द्धन तथा उसे अद्यतन बनाने के लिए फोर्ड फाउंडेशन से 50 हजार डालर के अनुदान की व्यवस्था की गई है। इसे प्राप्त करने का काम तीन साल में पूरा हो जाएगा। श्री खोकर के संग्रह में से सामग्री अभिलेखागार में प्राप्त होने लगी है।

(v) अन्य संग्रह

भारत तथा पूर्व एशिया के जातीय नृत्यों के विषय में ला मेरी का संग्रह जिसमें टाइप हुई पांडुलिपियां, श्रव्य कैसेट, नोट बुक, फोटोग्राफ, टिप्पणियां, कटी-फटी पुस्तकें आदि शामिल हैं तथा उन्हीं के द्वारा लिखी गई कुछ पुस्तकें भी वर्ष के दौरान प्राप्त की गई।

वर तथा वधू द्वारा पारंपरिक कूर्ग विवाह के समय पहने जाने वाले आभूषण भी प्राप्त किए गए।

(vi) उपस्कर

वर्ष के दौरान भारत सरकार तथा जापान सरकार ने 4.10 करोड़ येन की सांस्कृतिक अनुदान सहायता के लिए एक करार पर हस्ताक्षर किए। इस अनुदान से केन्द्र के सांस्कृतिक अभिलेखागार के लिए उपस्कर खरीदा जाएगा।

(vii) क्षेत्रगत संग्रह

मगध विश्वविद्यालय के एक अतिथि आचार्य (विजिटिंग प्रोफेसर) ने वर्ष के दौरान केन्द्र की ओर से दक्षिण पूर्व एशिया के देशों का अध्ययन दौरा किया, जिसका उद्देश्य था सांस्कृतिक अभिलेखागार के लिए देशों में सामग्री की उपलब्धता का पता लगाना। यह दौरा यूनेस्को से प्राप्त वित्तीय सहायता से किया गया था।

पुस्तकालय का उद्घाटन

संदर्भ पुस्तकालय का औपचारिक उद्घाटन दिनांक 10 फरवरी, 1989 को मानव संसाधन विकास मंत्री श्री पी. शिवशंकर द्वारा किया गया। अब पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों, माइक्रोफिल्मों, माइक्रोफिशों और अन्य सामग्री को अध्येता, शिक्षाविद देख पढ़ सकते हैं।

II कलाकोश

जब कि कला निधि का कार्य प्राथमिक और गौण सामग्री को इकट्ठा करना, सूचना की छानबीन करना और डेटाबेस तैयार करना है, वहीं कला कोश बौद्धिक परंपराओं का उनके बहुस्तरीय एवं बहुविषयक संदर्भों में अनुसंधान करता है। यह केन्द्र के मुख्य अनुसंधान तथा प्रकाशन प्रभाग के रूप में काम करता है। यह पाठ्य, मौखिक, दृश्य तथा श्रव्य के साथ-साथ शाब्दिक, सिद्धान्त के साथ-साथ व्यवहार पक्ष की ओर ध्यान आकर्षित करता है और कलाओं को स्वदेशी (अंतर्विषयक) प्रणाली के अभिन्न अंग के रूप में प्रस्तुत करता है।

उपर्युक्त उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इस प्रभाग ने,

(क) उन प्राथमिक संकल्पनाओं का पता लगाया है जो भारतीय विश्व दृष्टिकोण की मूलाधार हैं और जो सभी विषयों/शाखों तथा जीवन के आयामों में व्याप्त हैं;

(ख) प्राथमिक ग्रंथों की स्रोत सामग्री का भी पता लगाया है जो अब तक अज्ञात, अप्रकाशित और अप्राप्य थी। अब उस सामग्री को अनुवाद के साथ मूल भाषा में प्रकाशित किया जाएगा;

(ग) उन विद्वानों तथा पंडितों की कृतियों के प्रकाशन की योजना बनाई है जो अपने समग्रवादी दृष्टिकोण के माध्यम से, अन्तरसांस्कृतिक पद्धति तथा बहुविषयक रीति से कलात्मक परंपराओं को समझने में अग्रणी रहे हैं; और

(घ) एक 21 खंडीय विश्वकोश के निर्माण का कार्यक्रम प्रारम्भ करने के लिए योजना का प्रारूप तैयार किया है।

प्रभाग का कार्य मुख्य रूप से चार बड़ी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:-

1. **कलातत्वकोश:** आधारभूत संकल्पनाओं का कोश और पारिभाषिक शब्दावलियां
2. **कलामूलशास्त्र:** उन आधारभूत ग्रंथों की श्रृंखला जो भारतीय कलात्मक परंपराओं की बुनियाद हैं और प्राथमिक ग्रंथ जो किसी भी कला विशेष से संबंधित हैं।
3. **कलासमालोचन:** समीक्षात्मक पांडित्य की श्रृंखला; और
4. **कलाविश्वकोश:** कलाओं का बहुखंडीय विश्वकोश।

कार्यक्रम क: कलातत्वकोश

(i) आधारभूत संकल्पनाओं का कोश और पारिभाषिक शब्दावलियां

इंदिरा गांधी कलाकोश की पहली परियोजना है भारतीय कलाओं की आधारभूत संकल्पनाओं का कोश। इसका उद्देश्य

आधारभूत संकल्पनाओं पर प्रकाश डालना है। विभिन्न विद्वानों के परामर्श से लगभग 250 संकल्पनाओं के पारिभाषिक शब्दों का चयन किया गया है। इन पारिभाषिक शब्दों के चयन की कसौटी उनकी व्यापकता के सर्वेक्षण तथा अंतर्विषयक स्वरूप पर आधारित थी। अर्थात् जिन शब्दों का प्रयोग अनेक शास्त्रों तथा कलाओं में होता है वे चुने गए हैं और जो किसी क्षेत्र विशेष तक ही सीमित हैं उन्हें छोड़ दिया गया है। प्रत्येक संकल्पना के अत्यन्त अमूर्त स्तर से कलाओं के ठोस क्षेत्रों तक विकास की खोज की जाएगी। प्रत्येक संकल्पना का अनुसंधान अनेक विषयों/शास्त्रों तथा प्राथमिक ग्रंथों में उसके प्रयोग के संदर्भ में किया जाएगा। और विभिन्न क्षेत्रों में उस संकल्पना के विस्तार तथा प्रयोग को खोजा जाएगा। उदाहरणार्थ, 'ब्रह्म' जैसी सबसे अमूर्त एवं पराभौतिक (आध्यात्मिक) संकल्पना ने कलाओं के ठोस क्षेत्रों में ब्रह्मसूत्र के रूप में और वास्तुकला, मूर्तिकला या रंगशाला के संदर्भ में ब्रह्मस्थान के रूप में प्रवेश किया। केन्द्रीयता और व्यापकता की संकल्पना बुनियादी है और उसी प्रकार उदग्रता का सिद्धान्त भी। ऐसे विश्लेषण के द्वारा व्युत्पत्तिगत विकास और ऐतिहासिक निरंतरता तथा समस्तरीय अन्तर्विषयक/अन्तर-शास्त्रीय अन्योन्य संबंध की खोज की जा सकेगी। इन पारिभाषिक शब्दों को मोटे तौर पर कुछ तर्कसंगत अर्थ की दृष्टि से भिन्न-भिन्न वर्गों में विभाजित किया गया है।

शब्दकोश के लिए अपनाई गई पद्धति संस्कृत, प्राकृत और पाली में प्राथमिक स्रोत सामग्री की छानबीन पर आधारित है। प्रमुख ग्रंथों का अवगाहन करके शब्द विशेष से संबंधित उद्धरणों को निकाला जाता है। इन उद्धरणों को कार्डों पर संस्कृत में (देवनागरी तथा रोमन दोनों लिपियों में) अंग्रेजी अनुवाद के साथ लिखा जाता है और साथ में उनके बारीक अर्थ, संदर्भगत टिप्पणियां और/अथवा संगत टीका भी दी जाती है। आगे चलकर इन्हीं शब्दों की ग्रीक, लेटिन, फारसी तथा अरबी के प्राथमिक ग्रंथों (पाठों) में छानबीन की जाएगी।

इन कार्डों का उपयोग मुख्य रूप से दो प्रयोजनों से किया जा रहा है:-

1. संबंधित पारिभाषिक शब्द पर, उद्धरणों का उपयोग करते हुए लेख लिखने के लिए;
2. आधारभूत ग्रंथों के कलामूलशास्त्र नामक ऐसे ही एक अन्य कार्यक्रम में भारतीय कलाओं पर चयनिकाएं तैयार करने के लिए।

यह कार्य लगभग 25 विद्वानों/पंडितों में बांटा गया है, जिन्हें कतिपय ग्रंथ सौंपे गए हैं। मुख्य पारिभाषिक शब्दों के साथ उनके समस्रोतीय शब्द, पर्यायवाची तथा उनके यौगिक शब्द भी शामिल किए गए हैं। उद्धरणों के द्वारा यह बताया जाता है कि संकल्पना शब्द की परिभाषा क्या है, इसका सबसे पहले प्रयोग कहां हुआ है, उसके बाद वह किन-किन महत्वपूर्ण संदर्भों आदि में प्रयुक्त हुआ है। विभिन्न शास्त्रों से हजारों कार्ड तैयार किए जा चुके हैं। इन कार्डों के आधार पर कम्प्यूटरीकृत डेटाबेस तैयार किया गया है।

पारिभाषिक शब्दों पर इन कार्डों की सहायता से लिखे गए निबन्ध उस संकल्पना का संपूर्ण इतिहास नहीं दे सकते। ऐसा करना भारत-विद्याविषयक अनुसंधान की वर्तमान अवस्था में संभव भी नहीं होगा। तथापि इन कार्डों से यह पता चल सकता है कि एक संकल्पना विशेष वेदों तथा उनकी शाखा-प्रशाखाओं के मीमांसात्मक, भौतिक, कर्मकांडीय तथा पौराणिक/कथात्मक क्षेत्रों, बौद्ध और जैन स्रोतों से लेकर वेदांगों यानी प्राचीन विज्ञानों, विभिन्न शास्त्रों, पुराणों, तंत्रों, दर्शनों आदि से गुजरते हुए विभिन्न कलाओं में उसके रूढ़ होने तक किस-किस दौर से गुजरी है। इन निबन्धों में प्रमुख रूप से यह बताया जाता है कि संकल्पना विशेष की पृष्ठभूमि और कलाओं में उसकी अभिव्यक्ति के बीच क्या संबंध रहा है। कलाएं एक मध्यवर्ती स्थान धारण करती हैं, इसलिए वे तत्वमीमांसा (पराभौतिकी) तथा भौतिकी के बीच, आध्यात्मिकता तथा विज्ञान के बीच माध्यस्थ का काम करती हैं। उदाहरण के लिए एक स्तूप मंदिर एक संपूर्ण पराभौतिक अवधारणा का प्रतीक है, लेकिन इसके साथ ही इसके निर्माण के लिए वास्तुकला तथा इंजीनियरी जैसे तकनीकी विज्ञानों की आवश्यकता होती है। इसलिए अन्तर्विषयक दृष्टिकोण रखना अनिवार्य है।

ये निबंध विद्वानों के एक छोटे से मंडल द्वारा परस्पर परामर्श से लिखे जा रहे हैं जिससे कि सबका दृष्टिकोण बराबर समान रहे। जैसे कि किसी भी शब्दावली या शब्दकोश में होता है, उसके उपयोग को सुविधाजनक बनाने के लिए परस्पर संदर्भ तथा सूचक दिए जा रहे हैं।

आलोच्य वर्ष के दौरान 'आत्मन्', 'ब्रह्मन्', 'बीज', 'शरीर', 'पुरुष', 'शिल्प' और 'तक्षण' जैसे व्यापक शब्दों का प्रथम

खंड प्रकाशित किया गया है। उस पर जितनी समीक्षाएं प्राप्त हुईं, सब अनुकूल थीं।

दूसरे चरण में, कलाओं की विभिन्न शाखाओं की तकनीकी शब्दावलियां प्रकाशित की जाएंगी। इनके लिए आवश्यक सामग्री इकट्ठी की जा चुकी है। शब्दावलियों की परियोजना आधारभूत ग्रंथों (कलामूलशास्त्र) की श्रृंखला से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है और दोनों परस्पर सहायक होंगी।

कार्यक्रम ख : कलामूलशास्त्र

(i) भारतीय कलाओं के आधारभूत ग्रंथ

कलाकोश प्रभाग के दूसरे दीर्घकालिक कार्यक्रम के अन्तर्गत वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला से लेकर संगीत, नृत्य, नाट्य तक की सभी भारतीय कलाओं से संबंधित आधारभूत ग्रंथों के व्याख्यापित पाठों तथा अनुवादों का चयन तथा सुव्यवस्थित रूप से संपादन करके उन्हें वैज्ञानिक तथा तकनीकी टीकाओं के साथ प्रकाशित किया जाएगा। इस कार्यक्रम के अंतर्गत कुल मिलाकर 108 ग्रंथों की एक श्रृंखला मूल, अनुवाद, शब्दावलियों तथा सचित्र उदाहरणों के साथ प्रकाशित की जाएगी। कार्यक्रम के प्रथम चरण में 24 ग्रंथों को उनका समीक्षात्मक संस्करण तैयार करके प्रकाशित करने का काम हाथ में लिया गया है। इस कार्य में भारतीय तथा विदेशी दोनों प्रकार के विद्वानों को सहयोजित किया गया है। अपनाई गई प्रक्रिया के अन्तर्गत प्रत्येक ग्रंथ को विषय में पारंगत एक या दो विशेषज्ञों को सौंपा जाता है। इसके लिए तत्संबंधी सब मुद्रित तथा हस्तलिखित सामग्री दे दी जाती है। सहयोजित विद्वान कलानिधि में उपलब्ध डेटाबेस भी उपयोग करते हैं।

(ii) मात्रालक्षणम्

(संपादक: डा. वेन हॉवर्ड, वैदिक साहित्य के विख्यात विद्वान)।

कलामूलशास्त्र की श्रृंखला के अन्तर्गत जो पहली पुस्तक प्रकाशित की जाएगी वह है मात्रालक्षणम्। यह पुस्तक संभवतः छंदों के लिखित रूप पर स्वराघात तथा बलाघात दर्शाने वाले उच्चारण चिन्ह लगाने और उनका सस्वर पाठ करने की शैली को लिखित रूप में प्रस्तुत करने का प्रथम प्रयास है और सस्वर पाठ की यही विश्व की सबसे जटिल शैली जिसके द्वारा (वैदिक) मंत्र कल्पनाशील शुद्धता के साथ पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित सौंपे गए। प्रस्तुत प्रकाशन मात्रालक्षणम् की अब तक उपलब्ध छः खंडित या अपूर्ण पांडुलिपियों, एक ग्रंथ लिपि में मुद्रित संस्करण (कृष्णस्वामी) और एक देवनागरी में मुद्रित संस्करण (बी.आर. शर्मा) पर आधारित है।

मात्रालक्षणम् ग्रंथ दो कारणों से महत्वपूर्ण है: पहला यह कि यह सस्वर उच्चरित ध्वनि और शब्द तथा लिखित आधार तथा शब्द के संबंध को स्थापित करता है, और दूसरे, यह उच्चारण को मापने के लिए समय की इकाई (मात्रा) की संकल्पना का विवेचन करता है। अक्षर और वर्ण, स्वरों और व्यंजनों की बीच अर्थ विषयक संबंध स्पष्ट करते हुए इस ग्रंथ ने उन विषयों की नींव डाली है जिन्हें आज स्वर विज्ञान, भाषा तथा छंद शास्त्र कहा जाता है।

(iii) दत्तिलम्

(संपादक: डा. मुकुंद लाठ)

कलामूलशास्त्र की श्रृंखला के अन्तर्गत दूसरा महत्वपूर्ण ग्रंथ है दत्तिलम्, जो केवल संगीत विषय का विवेचन करता है। दत्तिलम् संगीत के विषय में सैद्धांतिक विवेचन की एक स्पष्ट धारा का श्रीगणेश करता है जो भरत के नाट्यशास्त्र (ईसा की दूसरी शताब्दी) में संगीत के विषय में किए गए प्रतिपादन से अलग प्रकार का है। दत्तिलम् की विषय-वस्तु से स्पष्ट पता चलता है कि बहुत प्राचीन काल से ही अलग-अलग सैद्धांतिक धाराएं न केवल प्रचलित थीं बल्कि उन्हें मान्यता तथा स्वीकृति भी मिली हुई थी। प्रायः इस तथ्य को भुला दिया जाता है, और यह गलत निष्कर्ष निकाल दिया जाता है कि भारतीय कलाओं की परंपरा अपरिवर्तनशील रही है। संगीत की प्रणालियों में कालांतर में हुए परिवर्तनों के संदर्भ में देखा जाए तो भी यह पुस्तक बहुत महत्वपूर्ण प्रतीत होती है।

कार्यक्रम ग : कला समालोचन
(कलाओं पर समीक्षात्मक ग्रंथों की श्रृंखला)

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में संसार के सभी भागों से विद्वान एशिया की धरोहर की ओर आकर्षित हुए। कुछ ने खुदाई कार्य किया, कुछ ने प्राथमिक पाठ्य सामग्री की खोज की और एक तीसरे दल ने आधारभूत संकल्पनाओं पर विचार किया, उनके शाश्वत स्रोतों का पता लगाया और अलग-अलग किस्म की परंपराओं को आमने-सामने रखकर उसके बीच संचार सेतु बनाने का प्रयास किया। ये ही वे अग्रणी मार्ग-अन्वेषक थे जिन्होंने अभिव्यक्ति और प्रक्रिया के पीछे जीवन की एकता तथा संपूर्णता की ओर ध्यान आकर्षित किया। सांप्रदायिक हितों, धार्मिक अंधसिद्धान्तों और आध्यात्मिक पूर्व और भौतिकवादी पश्चिम की सामान्य घिसी-पिटी छवियों के पुराने विचारों, एकेश्वरवाद और बहुदेववाद की दीवारों की परवाह न करते हुए उन्होंने भारतीय तथा एशियाई कलाओं के संबंध में एक नए दृष्टिकोण की नींव डाली जो उनकी सोच की गहराई और व्यापकता का परिचायक था। इस तीसरे दल का कार्य पूर्व और पश्चिम दोनों के लिए सुसंगत तथा महत्वपूर्ण था। विखंडन से बेचैन तथा असंतुष्ट होकर दोनों इस समय भौतिक एकसूत्रता की तलाश में हैं और संपूर्ण के अखंड बोध और अनुभव के लिए प्रयत्नशील हैं। इसीलिए अब नवीकरण, पुनरुज्जीवन और नए शुभारंभों के विषय में संगोष्ठियां हो रही हैं। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विचार से अब वह समय आ गया है जब कि प्रारंभिक पथप्रदर्शकों के कार्य को सस्ते प्रकाशनों के माध्यम से भावी पीढ़ियों तक पहुंचाया जाए।

आगे अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए प्रभाग ने कुछ चुने हुए ग्रंथों/लेखकों की कृतियों के पुनर्मुद्रण/अनुवाद का कार्यक्रम शुरू किया है। चयन की कसौटी यही रही है कि अमुक कृति अंतरसांस्कृतिक बोध, तथा बहुविषयक दृष्टिकोण के कारण अत्यन्त महत्वपूर्ण है और भाषा की कठिनाई या सभी प्रतियां बिक जाने के कारण उसका अनुवाद/पुनर्मुद्रण बहुत जरूरी हो गया है।

प्रथम चरण में निम्नलिखित कृतियों का प्रकाशन हाथ में लिया गया है:-

1. राम लेजेंड एंड राम रिलीफ्स — ले. विलियम स्टटरहाइम
2. दि थाउजंड आर्म्ड अवलोकितेश्वर — लोकेशचन्द्र द्वारा अनूदित
3. इस्लामिक आर्ट एंड स्पिरिच्युअलिटी — ले. सैयद हुसैन नस्र
4. प्रिंसिपल ऑफ कॉम्पोजीशन — ले. एलिस बोनर

इस श्रृंखला का दूसरा दीर्घकालिक कार्य है — आनंद केंटिश कुमार स्वामी की संगृहीत कृतियों का प्रकाशन, जो विषय की दृष्टि से पुनः व्यवस्थित करके लेखक के प्रामाणिक संशोधनों के साथ छापी जाएंगी।

प्रथम चरण में ये चार खंड प्रकाशित होंगे:-

(i) एक विस्तृत ग्रंथसूची; (ii) एल्विन मूर तथा डॉ. राम पी. कुमार स्वामी द्वारा संपादित चुने हुए पत्र; (iii) विद्यापति बंगीय पदावली; (iv) ह्वाट इज सिविलाइजेशन ? (सभ्यता क्या है); (v) यक्षस

(i) राम लेजंड एंड राम रिलीफ्स इन इंडोनेशिया

आस्ट्रेनेशियाई भाषाओं के विभिन्न देशों में, जैसे इंडोनेशिया, मलयेशिया और फिलिपीन में रामायण के अनेक दक्षिण-पूर्व एशियाई संस्करण हैं।

इंडोनेशिया में राम कथा और राम के भित्तिचित्रअध्यक्ष द्वारा दि॰॰जर्मन भाषा में "राम लेजेंडन एंड राम रिलीफ्स इन इंडोनेशिया" नाम से विलेम स्टटरहाइम की उत्कृष्ट कृति 1925 में ॰॰॰शित हुई थी; लेकिन बहुत समय से उसकी एक भी प्रति बाजार में उपलब्ध नहीं है। दूसरे उसका कोई अंग्रेजी अनुवाद भी उपलब्ध नहीं था। अब अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित हो जाने से खोज के कई नए क्षेत्र खुल गए हैं।

स्टटरहाइम आने वाले लंबे समय तक बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों का एक महान व्यक्ति माना जाता रहेगा, जिसने अपने छोटे से जीवनकाल में इंडोनेशिया के स्मारकों का अध्ययन करने में अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा का परिचय दिया।

(ii) सहस्रभुज अवलोकितेश्वर

अवलोकितेश्वर की संकल्पना एवं प्रतिमा भारतीय तथा एशियाई कलामर्मज्ञों एवं इतिहासज्ञों के लिए एक पहेली बनी हुई है। उसकी हजार भुजाओं की तरह, उसके विषय में कई प्रकार के मत व्यक्त किए जाते रहे हैं। अवलोकितेश्वर के विषय में उपलब्ध समीक्षात्मक लेखों में इसे विशुद्ध रूप से बौद्ध प्रतिभा से लेकर बुद्ध तथा शिव का समन्वयात्मक रूप माना जाता रहा है। इस विषय में वाद-विवाद बौद्ध और शैव प्रतिमा विज्ञान अथवा लोकेश्वर तथा अवलोकितेश्वर के संबंध तक ही सीमित नहीं रहा है बल्कि अब तो यह समझा जा रहा है कि इस विवाद में दक्षिण-पूर्व एशिया तथा पूर्व एशिया में स्थित अवलोकितेश्वर की अनेक अभिव्यक्तियों को शामिल कर लिया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि मूल संस्कृत पाठ को तो लोग भूल चुके हैं और वह लुप्त हो चुका है तथापि यह भी स्पष्ट है कि अवलोकितेश्वर की संकल्पना और उसका पाठ तिब्बत, चीन, कोरिया, जापान तक पहुंचे थे। अवलोकितेश्वर की प्रतिमा अनेक नामों से जानी जाती है और पुस्तक के कई पाठांतर हैं। इस अनेकता के मूल में दो स्पष्ट स्तर हैं—एक, प्रतिमा विज्ञान के रूपात्मक तत्व और स्तोत्र शास्त्र।

डॉ. लोकेशचन्द्र ने चीनी में लिप्यंतरित पाठों के टुकड़ों को जोड़ कर और जापानी तथा कोरियाई पाठांतरों के आधार पर इस स्तोत्र के लुप्त संस्कृत पाठ का पुनरुद्धार किया है। पाठांतरों में प्रमुख थे: चिहतुंग (627-649 ई.) का चीनी संस्करण और उसके बाद अमोघवज्र (746-774 ई.) का संस्करण तथा अन्य जापानी तथा कोरियायी संस्करण।

(iii) इस्लामी कला तथा अध्यात्म

सैयद हुसैन नस्र ने अपनी उत्कृष्ट व्यापक दृष्टि के बल पर पाश्चात्य तथा प्राच्य दोनों श्रेणियों के पाठकों को यह बताया है कि इस्लामी परंपरा में हर कला रूप किस तरह संबद्ध प्राकृतिक विज्ञान पर आधारित है — अपने बाह्य रूप में नहीं, बल्कि अपनी आंतरिक वास्तविकता के साथ। सुलेखनकला, चित्रकला, वास्तुकला, साहित्य, संगीत और रूपंकर कलाओं का विवेचन करते हुए नस्र महोदय इस्लाम के आंतरिक तत्वों में प्रवेश करते हैं और यह दर्शाते हैं कि कला का मुस्लिम के व्यक्तिगत जीवन में और समग्र रूप से एक समुदाय के जीवन में क्या भूमिका अदा करती है।

इस्लामी परंपरा में कला के मूल की खोज करके, सैयद हुसैन नस्र एकता के नए आयामों का द्वार खोलते हैं जो आधुनिक पश्चिमी कला में लुप्त से हो गए हैं। ऐसा करके उन्होंने इस पुस्तक के महत्व को बढ़ाते हुए इस्लामी विश्वासों से बाहर सभी परंपराओं के पाठकों के हृदय और सर्जनात्मक मनोवेगों को छू दिया है।

सैयद हुसैन नस्र की कृति केन्द्र के लिए अर्थ और रूप से स्तर पर और विविध रूपों के पीछे एस समंकित दृष्टि को उजागर करने वाले आधारभूत दृष्टिकोण के कारण बहुत ही प्रासंगिक एवं मूल्यवान है।

(iv) आनंद कुमारस्वामी की संगृहीत कृतियां

डॉ. राधाकृष्णन ने कहा था, "मैं डॉ. ए.के. कुमारस्वामी की रचनाओं का कई वर्षों तक अध्ययन करता रहा हूँ वे उन लोगों में से हैं जो भारतीय पुनर्जागरण के ही नहीं अपितु विश्व में एक नए जागरण के सूत्रधार हैं। वे सर्वोत्कृष्ट प्रतिष्ठा के धनी हैं। आशा है, जो छात्र आज के जमाने में क्षणिक आचार व्यवहार से प्रेरित है वे समुचित ज्ञान प्राप्त करने के लिए उनके मार्गदर्शन का लाभ उठाएंगे"। डॉ. जे.पीएच. फोगेल से लेकर टी.एस. इलियट तथा डॉ. पोलक तक के तमाम लेखकों, कला इतिहासज्ञों, वैज्ञानिकों ने डॉ. कुमारस्वामी के कार्य की प्रशंसा करते हुए कहा है कि उनकी कृतियों में विस्तृत अध्ययन और तीव्र दृष्टि के साथ-साथ अभिव्यक्ति की विलक्षण योग्यता का मेल है और इन्हीं गुणों ने उन्हें पूर्व और पश्चिम, भूत और वर्तमान, लिखित और मौखिक, शब्द और आकृति, एक स्पष्ट धारा का ध्वनि और गति, गति और अंतरात्मा के बीच मध्यस्थ बना दिया है। विभिन्न सभ्यताओं, भाषाओं, कलाओं, शिल्पों की सीमाओं के बंधनों को तोड़ते हुए, वे अपनी असाधारण पहुंच के बल पर सर्वत्र छाए हुए थे। उन्होंने एक ओर जहां तथ्यों और प्रमाणों को जुटाते हुए एक विद्वान की तरह लिखा है वहीं दूसरी ओर उनकी रचनाओं में एक कवि की सी संवेदनशीलता तथा एक तत्वद्रष्टा ऋषि की अंतर्दृष्टि दृष्टिगोचर होती है।

केन्द्र ने उनके पुत्र डॉ. राम पी. कुमारस्वामी के सहयोग से, जिन्होंने उदारतापूर्वक भारतीय संस्करणों की रॉयल्टी पर अपना हक छोड़ दिया है, आनंद के. कुमारस्वामी की सभी रचनाओं को अगले कुछ वर्षों के दौरान 30 खंडों में प्रकाशित करने का

कार्यक्रम बनाया है। इन खंडों में प्रकाशित करने का अलग-अलग विषयों, जैसे भूविज्ञान, कला सिद्धांत एवं इतिहास, प्रतीकवाद तथा पुराणशास्त्र, बौद्ध कला एवं दर्शन, राष्ट्रीयता, भारतीय संस्कृति तथा अंतरसांस्कृतिक प्रभाव, समाज विज्ञान तथा सरकार, वैदिक भाष्य तथा तत्वमीमांसा तथा नित्य दर्शन के अंतर्गत वर्गीकृत करके उनकी सभी रचनाओं को शामिल किया जाएगा।

आनंद कुमारस्वामी के चुने हुए पत्र

इस श्रृंखला के अंतर्गत पहला प्रकाशन है आनंद कुमारस्वामी के चुने हुए पत्र (सिलेक्टेड लेटर्स ऑफ आनंद कुमारस्वामी)। इस खंड में सम्मिलित पत्रों से, जो पहली बार प्रकाशित हुए हैं इस दृढ़संकल्प व्यक्ति के स्वभाव का पता चलता है जो किसी भी सिद्धांत या विचारधारा में अथवा राजनीतिक या दार्शनिक वादों में विश्वास नहीं करता था। इन पत्रों में एक भूवैज्ञानिक के रूप में अपने प्रशिक्षण के जरिये प्राप्त वैज्ञानिक परिशुद्धता को अपनी संवेदनशीलता के गुण के साथ मिलाते हुए ए.के. कुमारस्वामी ने इतिहास, दर्शन, धर्म, कला तथा शिल्प के विषय में अपने विचार व्यक्त किए हैं। ये पत्र समकालीन वैज्ञानिकों, संस्कृत विद्वानों, बौद्ध भिक्षुओं तथा कवियों को लिखे गए थे, जिनमें श्वाइत्जर, एरिक गिल, नॉरथॉप, हरमन गेटज, म्यूरहेड, नौयस, जॉर्ज, सारटन और बहुत से अन्य शामिल थे। इन से कुमारस्वामी की मानसिक शक्ति के अविश्वसनीय विस्तार का पता चलता है जो सभ्यताओं, संस्कृतियों, भाषाओं, कलाओं और शिल्पों की सीमाओं को पार करते हुए सर्वत्र व्याप्त है।

(v) भावी कार्यक्रम

समीक्षात्मक पांडित्यपूर्ण ग्रंथों के प्रकाशन की श्रृंखला के दूसरे चरण में आधुनिक भारतीय भाषाओं के भारतीय ग्रंथकारों की कृतियों को शामिल करने का प्रस्ताव है। इसके अंतर्गत शिवराम कारंत, वासुदेव शरण अग्रवाल तथा हजारी प्रसाद द्विवेदी की कृतियों के प्रकाशन का काम हाथ में लिया जाएगा।

कार्यक्रम घः कला विश्वकोश

ऊपर दिए गए सिद्धान्तों पर आधारित 21 खंडीय विश्वकोश का कार्यक्रम दूसरे चरण में प्रारंभ किया जाएगा। इस कार्यक्रम की अकादमिक रूपरेखा तैयार करने के लिए 1989 में एक अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई।

इस कार्यशाला के आयोजन के लिए यूनेस्को से सहायता के लिए निवेदन किया गया था। इसके लिए यूनेस्को ने सहायता के रूप में 15,000 डालर की छोटी सी राशि प्रदान की। यह अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला मार्च, 1989 में हुई, जिसमें बहुत से विख्यात भारतीय तथा विदेशी विद्वानों ने भाग लिया। परियोजना की मूल संकल्पना पर विचार-विमर्श किया गया। कार्यशाला में की गई सिफारिशों को मुद्रित किया जाएगा।

केन्द्र के प्रकाशनों का विमोचन

केन्द्र द्वारा अपने विभिन्न कार्यक्रमों के अंतर्गत प्रकाशित अनेक खंडों अर्थात् कलातत्वकोश (खंड 1), मात्रालक्षणम्, दंतिलम्, सिलेक्टेड लेटर्स ऑफ आनंद के. कुमारस्वामी, थाउजेंड आर्म्ड अवलोकितेश्वर और एप लेजंड्स एंड एम रिलीफ्स का विमोचन इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के अध्यक्ष द्वारा दिनांक 12 दिसम्बर, 1988 को अपने निवास पर आयोजित एक समारोह में किया गया।

केन्द्र के संग्रह में उपलब्ध दुर्लभ पुस्तकों, जैसे फ्रेजर की पुस्तक "व्यूज फ्रॉम हिमालयाज" और स्टुअर्ड की पुस्तक "इंडियन पीजन्स एंड डव्ज" से चुने हुए कुछ चित्रों के पोस्टकार्ड जारी किए गए। जनपद संपदा विशेष रूप से शैल कला के संग्रहालय से लिए गए कुछ चित्रों के पोस्टकार्डों का भी विमोचन किया गया। एलिजबेथ बूनर द्वारा प्रदत्त 1000 चित्रकारियों में से 12 को कार्डों के लिए चुना गया। चित्र पोस्टकार्ड बहुत लोकप्रिय हुए। उन्हें शैक्षिक संस्थाओं में व्यापक रूप से बांटा गया।

III जनपद संपदा

जनपद संपदा प्रभाग कलाकोश प्रभाग के कार्यक्रमों के पूरक के रूप में कार्य करता है। इसका ध्यान पाठ और संदर्भ के बजाय भारत और एशिया की जनजातीय एवं ग्रामीण संस्कृतियों की समृद्ध तथा विविध रूप-रंगों में उपलब्ध धरोहर की कला अभिव्यक्तियों और संदर्भों पर केन्द्रित रहता है। कला और संस्कृति के क्षेत्र में निरंतरता एवं परिवर्तनशीलता बराबर बनी रही है। बीच-बीच में अनेक छोटे-बड़े सांस्कृतिक आंदोलन होते रहे हैं, जिनके द्वारा अधिक कठोर, निर्जीव गतिहीन तथा संहिताबद्ध परंपराओं को, जिन्हें 'शास्त्रीय' कहा जाता है, अपने कायाकल्प के लिए प्रेरणा मिलती रही है और इस प्रकार सांस्कृतिक क्षेत्र में नवीकरण की प्रक्रिया बराबर चालू रही है। कलाभिव्यक्ति जीवन-चक्र तथा जीवन-संचालन का अभिन्न अंग है। यह अभिव्यक्ति किसी न किसी रूप में छोटे या बड़े पैमाने पर अनेक रूप और प्रकार के मेलों और उत्सवों के माध्यम से सामूहिक तौर पर बारहों महीने होती रही है। आज भी ये मेले-महोत्सव अपनी सजीवता और चहल-पहल के लिए तो खूब जाने माने जाते हैं, पर अब तक उनको विश्व के समग्र रूप की सजीव निरंतरता को अभिव्यक्त करने वाली संपूर्णता को बजाय अलग-अलग टुकड़ों में ही देखा गया है।

जनपद संपदा प्रभाग के अनुसंधान तथा अन्य कार्यकलापों का उद्देश्य इन कलाओं को उनके आर्थिक-सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक संदर्भों में पुनः स्थापित करना और भारतीय समाज तथा संस्कृति के विकास में उनके योगदान को उजागर करना है। उन्हें पाठ्य परंपराओं की अतिरिक्त या उप धारा नहीं समझा जा रहा है। हालांकि मौखिक परंपराओं पर जोर दिया जा रहा है पर लिखित परंपराओं और सिद्धांत पक्ष की भी उपेक्षा नहीं की जा रही है। एक बार फिर सिद्धांत पक्ष तथा व्यवहार पक्ष, पाठ्य तथा मौखिक, शाब्दिक, दृश्य तथा गत्यात्मक सभी पक्षों को एक लाक्षणिक पूर्ण के रूप में देखा जा रहा है न कि समेकित किए जाने वाले अलग-अलग खंडों के रूप में। कार्यक्रम प्रसार करने के मामले में जन, लोक, देश, लौकिक, मौखिक जैसे शब्दों को महत्व दिया जा रहा है।

इस प्रभाग के कार्यक्रमों का विभाजन इस प्रकार है:-

(क) मानव जाति वर्णनात्मक संग्रह — इन महत्वपूर्ण संग्रहों में मूल, अनुकृतियां तथा रिप्रोग्राफिक प्रतिलिपियां शामिल होंगी, जो बुनियादी स्रोत सामग्री के रूप में इकट्ठी की जाएगी।

(ख) बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियां तथा गतिविधियां — इन कार्यक्रमों के अंतर्गत दो दीर्घाएं स्थापित की जाएंगी, यानी आदिदृश्य अर्थात् भारत तथा अन्य देशों की शैल कला और आदिनाद अर्थात् ध्वनि, संगीत और वाद्य यंत्र। ये दृष्टि एवं श्रवण (नेत्र तथा कान संबंधी ज्ञानेंद्रियों से संबंधित आधारभूत) संकल्पनाएं होंगी। अन्य कार्यक्रमों में किसी विषय विशेष या लघु क्षेत्र के संबंध में परिवर्तनशील बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियां या कार्यक्रम होंगे।

(ग) जीवन शैली अध्ययन — यह कार्यक्रम आगे (1) लोक परंपरा और (2) क्षेत्र संपदा नामक दो भागों में बंटे हैं। इन कार्यक्रमों के परिणाम ग्रंथों, टेपों, वीडियो फिल्मों और मानचित्रात्मक अध्ययनों के रूप में प्रस्तुत किए जाएंगे।

(घ) क्षेत्र संपदा

(ङ) बाल जगत — इस अनुभाग के कार्यक्रम बच्चों को जनजातीय और लोक संस्कृतियों की समृद्ध धरोहर से परिचित कराएंगे।

(च) प्रायोगिक रंगशाला (थियेटर)-एवं-स्टूडियो — यह वह स्थल होगा जहां मिलकर सामूहिक कार्यकलाप तथा नए-नए प्रयोग किए जाएंगे। यहीं पर कार्यालय के आंतरिक प्रलेखन कार्य के लिए स्टूडियो होगा।

(छ) संरक्षण प्रयोगशालाएं — ये प्रयोगशालाएं कलाकृतियों तथा कला शिल्पों के संरक्षण का कार्य करेंगी।

कार्यक्रम क — मानव जाति वर्णनात्मक संग्रह

इस कार्यक्रम के अंतर्गत मानव जातिवर्णन संबंधी मूल वस्तुएं तथा अनुकृतियां प्राप्त की जाएंगी और रिप्रोग्राफिक सामग्री का पुस्तकालय होगा। दूसरा काम होगा कार्यालय के आन्तरिक संग्रह का सुव्यवस्थित ढंग से प्रलेखन करना और सूचना के आदान-प्रदान के लिए भारतीय एवं विदेशी संस्थाओं के साथ पारस्परिक संपर्क जोड़ना। आशा है, इससे देश के विभिन्न भागों

में पहले से प्राप्त किए गए संग्रहों के बारे में सूचना का आदान-प्रदान करने की काफी समय से महसूस की जा रही आवश्यकता पूरी हो जायेगी।

अब तक निम्नलिखित सामग्री प्राप्त की जा चुकी है:-

1. अनुकृतियां
   भीमबेटका की शैल कला चित्रकारियां (रॉक आर्ट पेंटिंग्स ऑफ भीमबेटका) — ले. डॉ. यशोधर मंठपाल
2. रिप्रोग्राफ (प्रतिलिपियां)
   (क) चावल के आटे से बने रेखाचित्रों की रंगीन पारदर्शियां (ट्रांसपेरेंसी) — डॉ. मार्था स्टान से प्राप्त।
   (ख) केरल और कर्नाटक की कर्मकांडीय कलाओं के विषय में श्री बालन नंबियार, डॉ. सीता नंबियार और प्रो. शंकर पिल्लै (नाट्य विद्यालय, कालीकट) से प्राप्त क्षेत्र संबंधी टिप्पणियां, रंगीन पारदर्शियां, वीडियो फिल्में।
   (ग) मुतुशाही के कुमाउनी संगीत के वीडियो टेप जो श्रीमती मैरी थेरेसे दत्ता द्वारा तैयार किए गए थे।

कार्यक्रम ख — बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियां तथा गतिविधियां

इस कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित प्रस्तुतियों तथा गतिविधियों का उद्देश्य पिछले हजारों वर्षों के दौरान भारतीय समाज द्वारा प्रस्तुत की गई कला सामग्री से जनता को अवगत कराना है। दो स्थायी प्रदर्शनियां स्थापित की जाएंगी जो विशेष विषयों तथा क्षेत्रों संबंधी अन्य कार्यक्रमों के लिए पृष्ठभूमि का काम करेंगी। प्रदर्शनियों के नाम हैं — (i) आदिदृश्य और (ii) आदिनाद।

आदिदृश्य दीर्घा में भारत की प्रागैतिहासिक शैल कला तथा विश्व के अन्य भागों से प्राप्त प्रतिनिधिक नमूने प्रदर्शित किए जाएंगे। यहां पहली बार बताया जाएगा कि शैल कला (रॉक आर्ट) एकमात्र "कर्मकांड" या "जादूटोने" का ही सूचक नहीं समझा जाना चाहिए। यहां उन अनुकृतियों को प्रदर्शित किया जाएगा जो सर्वप्रथम, चित्रकारी या रेखाचित्र के मूल संदर्भ को सही करके प्रस्तुत करेंगी। दूसरे, उन अनुकृतियों को बिना सोचे-समझे शिकारी जीवन, प्रारंभिक खेती तथा व्यवस्थित कृषि की विकास अवस्थाओं की ओर पीछे न ढकेलते हुए उन का काल सही-सही बतलाने का प्रयत्न किया जाएगा। यहां इस कला को स्वतः स्पष्ट या सुबोध रूप में बताने की बजाय उसके लाक्षणिक गुप्त संकेतों को जनता के लिए स्पष्ट किया जाएगा। पुरातत्वीय तथ्यों तथा कालक्रम आदि के संदर्भ में उस कला के असली अर्थ को समझने का प्रयास किया जाएगा। साथ ही प्रागैतिहासिक कला और समकालीन जन-जातीय कलाओं के पारस्परिक संबंध को प्रस्तुत किया जाएगा।

इसी प्रकार, आदिनाद दीर्घा का कार्य भी भारत में संगीत के कालक्रमिक "विकास" को दिखाने के लिए प्राचीन वाद्य यंत्रों के संग्रह के प्रदर्शन तक ही सीमित नहीं रहेगा, बल्कि वह एक "नाद आकाश" (साउंडस्पेस) के माध्यम से मौखिक संगीत और वाद्यों को अधिक महत्व देगी और जीवन के संचालन में नाद और संगीत को महत्व को दर्शाएगी। इस प्रकार संगीत को दिक् और काल के संदर्भ में सजीव करने का प्रयास किया जाएगा।

उक्त दो प्रदर्शनी दीर्घाओं के अतिरिक्त, जो दृष्टि तथा नाद के समप्रवादी उपयोग के माध्यम से प्राचीन भूत को प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगी और इसीलिए उनके ये नाम (आदिदृश्य और आदिनाद) दिए गए हैं, और भी कई गतिविधियां/प्रस्तुतियां/प्रदर्शन होंगे जिनके द्वारा प्राचीन कला व शिल्पकृतियों के साथ-साथ उसी कला या शिल्प के वर्तमान स्वरूप को भी प्रस्तुत किया जाएगा। ये कार्यक्रम समय-समय पर बदलते रहेंगे और इनके अन्तर्गत भारत के और बाहर से भी कला, शिल्प, संगीत, नृत्य के व्यावहारिक निरूपण/प्रदर्शन प्रस्तुत किए जाएंगे जिनसे इनके अंतिम रूपों का ही नहीं बल्कि उन्हें तैयार करने की प्रक्रिया का भी पता चलेगा।

वर्ष के दौरान शैल कला दीर्घा के लिए विशेषज्ञों के साथ प्रारंभिक चर्चा हुई और दीर्घा के लिए अन्तिम संकल्पनात्मक योजना बना ली गई। इस संबंध में फ्रांस के प्रोफेसर लॉरब्लैंचेट ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का और यशोधर मठपाल ने आस्ट्रेलिया का दौरा किया।

डॉ. मठपाल ने उत्तराखंड में जाकर वहां उपलब्ध शैल कला चित्रकारियों का अध्ययन किया और इस बीच तत्संबंधी रिपोर्ट प्रस्तुत की।

कार्यक्रम ग — जीवन शैली अध्ययन

अब तक जनजातीय और लोक संस्कृति पर जो भी अध्ययन हुआ है वह सब अधिकतर एक ही दिशा में और एकांगी ही हुआ है, चाहे वह मानवशास्त्रीय दृष्टि से किया गया हो अथवा समाज-विज्ञान, अर्थशास्त्र, सामाजिक, राजनीतिक, इतिहास या कला-इतिहास की दृष्टि से। उन विषयों ने प्रत्येक कला के सार्वजनीन तथ्यों या बहुपक्षीय/बहुस्तरीय स्वरूप और विलक्षणता का बहुत कम ध्यान रखा है। जनपद संपदा प्रभाग एक नया दृष्टिकोण, एक नई पद्धति अपनाना चाहता है, और वर्तमान पद्धतियों की जांच करके जीवन शैलियों के अध्ययन के लिए वैकल्पिक मॉडल तैयार करने का प्रयास कर रहा है। यह दृष्टिकोण इस धारणा पर आधारित है कि जीवन एकल आयामों या इकाइयों में बंटा हुआ नहीं है और न ही कोई एक मॉडल किसी समुदाय के सांस्कृतिक जीवन की संपूर्ण झांकी प्रस्तुत कर सकता है। यह दृष्टिकोण संस्कृति को एक सीमांकित स्थान में एक बहुआयामी प्रणाली मानता है।

इन अध्ययनों का उद्देश्य प्राकृतिक परिवेश, दैनिक जनजीवन, वार्षिक पंचांग तथा जीवन-चक्र, विश्व-दृष्टिकोण, ब्रह्मांड विज्ञान, सामाजिक संरचना, ज्ञान एवं कौशल, पारंपरिक प्रौद्योगिकी और कला अभिव्यक्तियों के बीच कई प्रकार के संबंध जोड़ना है। ये अध्ययन स्वरूप में बहुविषयक हैं और कलाओं के क्षेत्र में कौशलों और तकनीकों के अन्योन्याश्रय, भिन्न-भिन्न क्षेत्रों पर एक दूसरे के असर और जनजातीय, ग्रामीण तथा शहरी परंपराओं-मौखिक या लिखित — के पारस्परिक प्रभाव को प्रकट करते हैं।

जीवन शैली के सभी अध्ययनों में जो रीति अपनाई गई है उसमें सर्वप्रथम प्राथमिक तथा गौण स्रोतों से विशद ग्रंथसूची बनाई जाती है और उसके पश्चात् उन मुख्य शब्दों का (पर्यायवाची) कोश बनाया जाता है जो उस बहुस्तरीय स्थिति को व्यक्त करते हैं जहां एक संस्कृति में भौतिक, जैविक और परामौतिक संबंध पाए जाते हैं और भाषा के द्वारा अभिव्यक्त हुए हैं। संस्कृति संबंधी मुख्य शब्दों के कोश की जांच सूक्ष्म क्षेत्रगत अध्ययनों के साथ-साथ श्रव्य-दृश्य प्रलेखन के जरिए की जा रही है। आशा है, ऐसा प्रत्येक अध्ययन एक प्रबन्ध, श्रव्य-दृश्य लेखन और कला तथा शिल्प के विशेष पक्षों की चित्रात्मक प्रस्तुति के रूप में संपन्न होगा। क्षेत्रगत अध्ययनों का एक उद्देश्य भविष्य में अध्ययन करने के लिए कम्प्यूटर उपयोगी मॉड्यूल विकसित करना भी है।

जीवन शैली के अध्ययनों के कार्यक्रम के दो उपसमूह हैं — पहला एक समुदाय विशेष का अध्ययन करता है तो दूसरा क्षेत्र विशेष का। वे क्रमशः लोक परंपरा और क्षेत्र संपदा कहे जाते हैं। लोक परंपरा अध्ययनों के लिए चार आर्थिक-सांस्कृतिक अंचल निर्धारित किए गए हैं। पूर्वी अंचल में दो अध्ययन शुरू किए गए हैं। उनके विषय हैं: छोटा नागपुर के संथाल और मणिपुर के मेइती लोग। पश्चिम अंचल में बाजा पैदा करने वाले समुदायों का अध्ययन प्रारम्भ किया गया है। उत्तरी हिमालय क्षेत्र तथा दक्षिण भारत के अंचलों का अध्ययन भविष्य में शुरू किया जाएगा।

संथालों, मेइतियों और मुक्कुवरों से संबंधित अध्ययन के लिए ग्रंथसूची तैयार करने का काम समाप्ति की विभिन्न अवस्थाओं में है। "लाई हरोबा" नामक एक 16 मि.मी. चौड़ी एक घंटे की फिल्म होगी जिसमें मणिपुर के लाई हरोबा उत्सव से संबंधित सभी रस्मों को क्रमिक रूप से दिखाया जाएगा। आशा है, यह फिल्म 1990 तक बनकर प्रदर्शन के लिए तैयार हो जाएगी।

केन्द्र के एक वरिष्ठ अधिकारी ने जुलाई 1989 में जगरेब (यूगोस्लाविया) में मानव विज्ञान तथा मानव जाति विज्ञान पर आयोजित 12वें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और "जीवन शैली अध्ययनों के लिए वैकल्पिक मॉडलों का विकास" विषय पर एक शोधपत्र पढ़ा।

यूनेस्को कार्यशाला

"बहुमाध्यमिक कम्प्यूटरोपयोगी प्रलेखन की सहायता से अन्तरासांस्कृतिक जीवन शैलियों का अध्ययन" विषय पर 9 जनवरी से

13 जनवरी, 1987 तक एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। उसमें 11 विदेशी और 20 भारतीय विद्वानों ने भाग लिया, जिनमें उल्लेखनीय हैं डॉ. हयान होइजर, प्रो. ग्राहम चैपमैन, प्रो. शिगेहारू सुगिता, प्रो. जीन क्लौडे गार्डिन, डॉ. एच.के. अनुसूया देवी और डॉ. आर. नरसिंहन। कार्यशाला का उद्घाटन प्रो. एम.जी.के. मेनन द्वारा किया गया। यूनेस्को के प्रतिनिधि डेरकैच मुख्य अतिथि थे। कार्यशाला ने जीवन शैली अध्ययनों के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श किया और अधिकांश एशियाई देशों में आज भी बची विशिष्ट जीवन शैलियों का अध्ययन करने के तरीकों पर ध्यान आकर्षित किया। महत्वपूर्ण सूचना तथा डेटा संसाधन प्रौद्योगिकी पर भी विस्तार से चर्चा हुई। कार्यशाला ने कला, सांस्कृतिक धरोहर तथा सामुदायिक जीवन शैलियों के क्षेत्र में दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के लिए एक समेकित डेटाबेस प्रणाली तैयार करने के लिए अध्ययन के क्षेत्र, प्रौद्योगिकियां तथा प्राथमिकताएं भी निर्धारित कीं। इस कार्यशाला के विचार-विमर्श तथा सिफारिशों की संपूर्ण रिपोर्ट यूनेस्को तथा भाग लेने वाले सदस्य-सचिव के पास भेज दी गई है।

कार्यक्रम घ — क्षेत्र संपदा

इतिहास के अध्ययन से पता चलता है कि कतिपय प्रदेश/क्षेत्र समय के साथ-साथ सांस्कृतिक केन्द्रों के रूप में विकसित होते गए हैं और उनसे आकर्षित होकर संसार के सभी भागों से लोग वहां आते रहे हैं। वे लोगों के आवागमन के मुख्य केन्द्र रहे हैं। वहां लाने और ले जाने वाली दोनों तरह की शक्तियां काम करती रही हैं। वे केन्द्रीय स्थानों के रूप में काम करते रहे हैं जहां आने वाले को ठहरने के लिए स्थान मिला है, जाने वाले को यात्रा के साधन। इन केन्द्रों ने लोगों को परस्पर मिलने-जुलने और प्रभावित करने के अवसर प्रदान किए हैं। अक्सर कोई मंदिर या मस्जिद वहां का भौतिक या भावनात्मक आकर्षण रहा है। अब तक ऐसे केन्द्रों का अध्ययन कालनिर्णय, इतिहास, धर्म या अर्थशास्त्र जैसे किसी एक विषय पर यानी एकांगी रहा है, सर्वसंपूर्ण नहीं, जिससे सर्जनात्मक कलाओं के क्षेत्र में बहुविध कार्यकलाप संचालित होते हैं। इसलिए क्षेत्र संपदा के अन्तर्गत किसी स्थान विशेष या मन्दिर और उसकी "इकाइयों" के ही अध्ययन की कल्पना नहीं की गई है, बल्कि एक केन्द्र विशेष के भक्ति विषयक, कलात्मक, भौगोलिक तथा सामाजिक पक्षों को परस्पर जोड़ने की प्रक्रिया के अध्ययन को भी कार्यक्रमों में शामिल किया गया है।

(i) ब्रज-नाथद्वारा

कतिपय स्थल सामाजिक-सांस्कृतिक आन्दोलनों के केन्द्र बन गए हैं। आस-पास के क्षेत्रों के ही नहीं दूर-दूर से लोग इन केन्द्रों की ओर आकर्षित होते हैं। यहां बारहों महीने कोई न कोई मेला, महोत्सव यज्ञ-याग, कर्मकांड, सौमित संस्कार, या सार्वजनिक सम्मेलन होते रहते हैं। जहां लौकिक, अलौकिक, धार्मिक, धर्मनिरपेक्ष, लिखित, मौखिक, दृश्य, गतिक यानी सभी प्रकार के विषयों पर खुलकर आदान-प्रदान होता है।

हालांकि कुछ स्थलों पर तो पृथक्कारी प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है जहां किसी देवी देवता के मंदिर या किसी पंथ या संप्रदाय विशेष के प्रमुख, संत-महात्मा या मठाधीश के मठ, समाधि या अन्य उपासना स्थल की चहारदीवारी के भीतर सब तरफ से पूर्णतः सुरक्षित एकांत में गोपनीय या प्रतिबंधित कार्यक्रम होते हैं, किन्तु अन्यत्र भौतिक तथा मानसिक रूप से पूर्णतः मुक्त वातावरण देखने को मिलता है जहां कुछ समय विशेष के लिए जाति-पांति का कोई बंधन नहीं होता। कुछ समय के लिए सभी कानून कायदे ताक पर रख दिए जाते हैं और तब लोग खुलकर एक दूसरे से मिलते हैं और प्रसन्नतापूर्वक संगीत, नृत्य, गायन आदि के रंगारंग कार्यक्रमों में आनन्दविभोर हो उठते हैं।

ब्रज क्षेत्र का अपना एक भौतिक एवं मानसिक अस्तित्व है। वैसे तो पुरातात्विक प्रमाणों से पता चलता है कि यह क्षेत्र ईसा की पहली शताब्दी के आसपास अलग अस्तित्व में आ गया था, परन्तु इतना तो निश्चित ही है कि यह क्षेत्र पिछले पंद्रह-सोलह सौ वर्षों से लगभग एक धार्मिक तीर्थ तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र रहा है। महाभारत के परिशिष्ट हरिवंश की पौराणिक व धार्मिक कथाओं में तत्संबंधी साहित्यिक संदर्भ खोजा जा सकता है। इसके बाद कुछ शताब्दियों का एक ऐसा अंतराल आया जब तत्संबंधी पुरातात्विक तथा साहित्यिक साक्ष्य का अकाल सा पड़ गया, किन्तु आठवीं-दसवीं शताब्दी से फिर पर्याप्त मात्रा में उल्लेख होने लगा।

तत्पश्चात् पांच शताब्दियां और बीतीं, और पंद्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी तक आते-आते ब्रज क्षेत्र सभी प्रकार की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र बन गया। पूर्व भारत से चैतन्य के अनुयायी यहां आकर बस गए। बादशाह अकबर ने मंदिर के लिए जमीन दी। दाक्षिणात्य संत यहां आ बसे। इस तरह यहां पूर्व और दक्षिण का मिलन हुआ। इस साथ अनेक धर्म, संप्रदाय, पंथ पनपने लगे। वैष्णव धर्म और भक्ति ने जोर पकड़ा। अष्टछाप कवियों का प्रादुर्भाव हुआ। रासलीला, नौटंकी, स्वांग और नृत्य-नाट्य के अन्य रूप फले फूले। ब्रज क्षेत्र पश्चिम भारत को प्रभावित करने लगा और उत्तर भी उससे अछूता न रहा। कलाओं ने नाना भेद और रूप धारण किए। सांझी, कदली (कजली), लघु तथा भित्ति-चित्रकला और पिछवई, ध्रुपद से लेकर हवेली संगीत, भजन और कीर्तन तक अनेक संगीत रूपों, नृत्य शैलियों, यहां तक कि पाक कला आदि का भी प्रादुर्भाव तथा विकास हुआ। सौर तथा चांद्र पंचांग के अनुसार, ऋतु उत्सव (मेले त्यौहार आदि) मनाए जाने लगे और नित्य सेवा का दैनिक कार्यक्रम चलने लगा। आज का ब्रज पूर्वकालीन ब्रज का ही एक जीता-जागता लघु रूप है।

कुछ विषयों में काफी काम किया गया है परन्तु वह अधिकतर एकपक्षीय या एकांगी है, तथापि पिछले दशक में भारतीय तथा विदेशी विद्वानों ने कुछ बहुआयामी तथा बहुविषयक अध्ययन प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया है।

श्री चैतन्य प्रेम संस्थान के सहयोग से कार्यान्वित की जा रही इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की परियोजना इस समस्त कार्य को एक साथ ला देगी और संपूर्ण पक्षों का परस्पर गुंथे हुए रूप में एक साथ अध्ययन करेगी। सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक सभी आयामों का एक साथ पृथकता और पारस्परिक आदान-प्रदान, सिद्धान्त और व्यवहार के स्तर पर अवलोकन किया जाएगा।

गौण स्रोतों की प्रथम बहुभाषी ग्रंथसूची तैयार करके इस परियोजना का श्रीगणेश किया जा चुका है। प्राथमिक स्रोतों के लिए एक डेटाबेस भी तैयार किया जा रहा है जो कर्मकांड और कलाओं का पाठ्य आधार प्रस्तुत करेगा। अप्रकाशित पांडुलिपियों की वर्णनात्मक सूचियां बनाने का काम शुरू किया जा चुका है। श्रव्य-दृश्य प्रलेखन संबंधी कठोर डेटा जो संस्था या व्यक्तियों के पास पहले से उपलब्ध है, संकलित किया जा रहा है। भारतीय तथा विदेशी विद्वानों, पुरातत्वविदों, संगीतज्ञों, कलाओं तथा शिल्पों के विशेषज्ञों का एक उच्चस्तरीय दल गठित किया गया है।

(ii) बृहदीश्वर

राजराज चोल द्वारा तंजवूर में निर्मित बृहदीश्वर मंदिर पूर्ण संतुलन तथा अनुपात का एक सुन्दर उदाहरण है। चोलों के इतिहास पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है और उस काल के स्थापत्य (वास्तुकला) की विशेषताओं के बारे में कुछ अच्छा काम किया गया है। विशाल मात्रा में उपलब्ध पुरालेख सामग्री का आंशिक रूप में अध्ययन किया गया है और अभिलेखागारों तथा पुस्तकालयों में उपलब्ध ऐतिहासिक अभिलेखों से साहित्यिक सामग्री का आकलन भी किया गया है। फिर भी ये कार्य एकांगी और एकपक्षीय ही हुए हैं। मंदिर की संपूर्णता केवल उसका मूर्तरूप/भवन ही नहीं है, बल्कि यह एक सजीव संस्थान है जो वास्तु, शिल्प, आगम, नृत्य, संगीत, कला, कारीगरों, जातियों, श्रेणियों और संप्रदायों की प्रकृति का समुच्चय है। इस अध्ययन का उद्देश्य इस मंदिर पर और उसके संपूर्ण परिवेश पर भूत और वर्तमान में, इस सभी आयामों से परिधि सहित केन्द्र के रूप में दृष्टिपात करना है। इस मंदिर के भौतिक तथा संकल्पनात्मक अस्तित्व का जो दूर-दूर तक प्रभाव पड़ा और इस पर जो बाहरी प्रभाव पड़ा उस सबके बारे में खोजबीन की जाएगी।

इस परियोजना के संबंध में भी वही कार्यप्रणाली अपनाई जा रही है जिसमें सर्वप्रथम प्राथमिक/गौण स्रोतों की ग्रंथ-सूची तैयार की जाती है और तत्पश्चात्, क्षेत्र कार्य, वास्तुशिल्पीय योजना, श्रव्य/दृश्य प्रलेखन का कार्य किया जाता है। डॉ. आर. नागस्वामी इस परियोजना के समन्वयकर्ता हैं।

(ङ) बाल जगत
(च) प्रयोगात्मक रंगशाला एवं स्टुडियो
(छ) संरक्षण तथा पुनरुद्धार प्रयोगशालाएं

ये तीनों कार्यक्रम अभी बहुत ही प्रारंभिक अवस्था में हैं।

IV कला-दर्शन

केन्द्र का चौथा प्रभाग है कला-दर्शन। जब भवन परिसर का कार्य समाप्त हो जाएगा तब प्रदर्शनात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए पर्याप्त स्थान व सभा भवन तथा प्रेक्षागृह होंगे जहां बड़े, मध्यम तथा छोटे पैमाने के तथा एकल कार्यक्रम प्रस्तुत किए जा सकेंगे। ये सब आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से सुसज्जित होंगे। इनमें से कुछ व्यावसायिक प्रस्तुतियों और कुछ अन्य सभा सम्मेलनों भेंट मुलाकातों तथा अन्य कार्यक्रमों के लिए उपयुक्त होंगे। फिलहाल केन्द्र कुछ संग्रहों और एकल रूप से समेकित विषय के कार्यक्रमों पर ध्यान दे रहा है जिनमें बहुविषयक संगोष्ठियां, बहुमाध्यमिक प्रदर्शनियां तथा कार्यशालाएं शामिल हैं।

कार्यक्रम क : संग्रह

सुश्री सैंस तथा सुश्री एलिजाबेथ ब्रूनर की चित्रकारियां जो 19 नवम्बर, 1986 को प्रधानमंत्री को भेंट की गई थीं, आलोच्य वर्ष में उनके फोटोग्राफ तथा प्रलेखन का कार्य संपन्न हुआ।

कार्यक्रम ख : प्रदर्शनी तथा संगोष्ठी

नवम्बर, 1988 में "आकार" नामक एक अंतरसांस्कृतिक प्रदर्शनी आयोजित की गई। इसमें विभिन्न वर्णरूप और सुलेख प्रस्तुत किए गए। इसका उद्घाटन श्री पी.वी. नरसिंह राव द्वारा किया गया। प्रदर्शनी अत्यन्त सफल रही और सबने एक स्वर से इसके विलक्षण प्रस्तुतिकरण की प्रशंसा की। संसार के सभी भागों से विशिष्ट व्यक्ति, विख्यात विद्वान बहुत बड़ी संख्या में इसे देखने आए। अति-विशिष्ट व्यक्तियों में भारत के राष्ट्रपति तथा उपराष्ट्रपति भी शामिल थे। उन्होंने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की जो दर्शक पुस्तिका में लिखी गई उनकी विचार टिप्पणी से सिद्ध होती है:

"बहुत शिक्षाप्रद एवं ज्ञानवर्द्धक मात्र एक घंटे के समय में दर्शक उससे कहीं ज्यादा सीख लेता है जो वह वर्षों तक पढ़ते रहने से भी नहीं सीख सकता। समस्त विश्व में एकता है परन्तु देखने के लिए प्रयास करना होता है"

आर. वेंकटरामन
जानकी वेंकटरामन

"प्रदर्शनी देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। यह वास्तव में कल्पनाशीलता तथा पांडित्य पर आधारित विलक्षण प्रदर्शनी है। यह प्रदर्शनियों की श्रृंखला में दो वर्ष पहले आयोजित "रूपं" प्रदर्शनी के बाद उतनी ही शानदार दूसरी बड़ी है। मेरा सुझाव है कि अगली प्रदर्शनी का विषय अपने बहुविध रूपों में "काल" होना चाहिए।
मैं डॉ. श्रीमती कपिला वात्स्यायन तथा उनके प्रतिभासंपन्न सहयोगियों को हृदय से बधाई देना चाहता हूं जिन्होंने हमें अपनी चेतना का विस्तार करने और अपनी संवेदन दृष्टि को पैना करने में सहायता दी है"

डॉ. कर्ण सिंह

"आखिर एक बार फिर भारतीय अभिकल्पन प्रतिभा पुष्पित हुई। संशय दूर हुआ। अब यह शाश्वत बनी रहे, यही कामना है"

डोरे एडवर्ड डोरे
स्कूल ऑफ आर्ट, विनिपेग, कनाडा

"तालपत्र, शिलाखंड, चर्म अथवा मृत्तिका: सर्वत्र शब्द उत्कृष्ट भावों से जाज्वल्यमान है"

फिलिप मोरिसन

"क्या कभी सोचा उस से शब्द मुखरित थे, पंक्तियां निसृत थीं ?
नहीं, नहीं ! शब्द हो वायु, घास, सूर्य थे, ये शब्द तुम में हैं..... वाल्ट ह्विटमैन

फिलिस मोरिसन

इस प्रदर्शनी को अभूतपूर्व सफलता को देखते हुए और जनता के आग्रह पर इसकी अवधि 21 जनवरी, 1989 तक बढ़ाने का निश्चय किया गया जबकि यह पूर्व कार्यक्रम के अनुसार 31 दिसम्बर, 1988 को समाप्त हो जानी थी। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद् ने इस प्रदर्शनी को विभिन्न भारतीय भाषाओं के विकास के बारे में जागरूकता प्रदान करने वाले शैक्षिक साधन के रूप में बहुत महत्वपूर्ण माना। "आकार" प्रदर्शनी के कुछ चुने हुए "उद्धरण" नीचे दिए जा रहे हैं:-

"आकार : रूप
उस पूर्ण रूप की तलाश है सबको,
भीतर और बाहर,
जो है सबका आदर्श,
रूप है जिसका दृष्टिगोचर सर्वत्र।"

ऋग्वेद, VI, 47.18

"तू जो अनकही विनती को भी सुन लेता है
तूने ही वर्णों को रूप और आकार दिया है:
उन्हीं के प्यार के लिए शिलाएं मोम की तरह कोमल हो गई है।"

जलालुद्दीन रूमी
सूफी संत कवि, फारस (13वीं शती)

"लेखन-शैली का उद्गम अथवा वर्णों का प्रथम आविष्कार यद्यपि एक अत्यन्त विवादग्रस्त विषय है तथापि यह सोचना समीचीन प्रतीत होता है कि सभी ज्ञान-विज्ञान के प्रवर्तक एवं प्रदाता उस परमेश्वर के बाद मानव (आदम) ने ही इसे विकसित किया।"

जोसेफ चैंपियन
समानांतर या तुलनात्मक लेखनशैली
सोदाहरण प्रतिपादित (1750) में

इसके अलावा, दिसम्बर के प्रारंभिक दिनों में सुलेखन विषय पर एक बहुविषयक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें भाग लेने के लिए देश-विदेश से कलाकार, सुलेखक, भाषाविद, कम्प्यूटर विशेषज्ञ आए।

कार्यक्रम ग : प्रलेखन

"आकार" प्रदर्शनी का प्रलेखन संबंधी कार्य पूरा हो गया और तत्संबंधी समस्त सामग्री को भण्डार में सुरक्षित रखने से पहले पैक करके उन पर लेबल तथा नम्बर लगा दिए गए। भविष्य में पुनः आयोजित करने के लिए प्रदर्शनी के कम्प्यूटर प्रलेख तैयार किए जा रहे हैं। प्रलेख का यह कार्य भारतीय कम्प्यूटर अनुरक्षण निगम (सी.एम.सी.) को सौंपा गया है।

कार्यक्रम घ : कार्यवृत्त और प्रकाशन

"कला, धर्म और विज्ञान में आकाश (दिक्) की संकल्पना" (कांसेप्ट ऑफ स्पेस इन आर्ट, रिलीजन एंड साइंस) नामक पुस्तक के पाठ को अंतिम रूप दिया जा चुका है। इसका पहला प्रूफ भी पढ़ा जा चुका है। आशा है कि नवम्बर 1989 तक

पुस्तक का विमोचन हो जाएगा। डिजाइन प्रविष्टियों पर पुस्तक प्रकाशित करने के लिए भी पाठ को अंतिम रूप दिया जा चुका है। इस पुस्तक में उन मॉडलों के चित्र होंगे जो इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के भवन परिसर की डिजाइन प्रतियोगिता के लिए प्रस्तुत किए गए थे। मॉडलों तथा नई दिल्ली क्षेत्र के फोटोग्राफ तैयार करने का काम पूरा हो चुका है। गैली प्रूफ पढ़े जा चुके हैं और नवम्बर 1990 तक पुस्तक प्रकाशित हो जाने की आशा है।

"अक्षर-विन्यास" संगोष्ठी में प्राप्त लेखों के प्रकाशन का कार्य हाथ में लिया जा चुका है। इसके लिए संगोष्ठी में भाग लेने वाले विद्वानों से निवेदन किया गया था कि वे संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए अपने लेखों की संपादित प्रतियां भेजें।

V सूत्रधार

इस प्रभाग के मुख्य कार्य हैं: विभिन्न प्रभागों के लिए कार्मिकों की व्यवस्था करना। उनको प्रशासनिक सहायता देना, सचिवालयिक कर्तव्य संभालना, लेखा कार्य तथा अन्य सामान्य प्रबंध के पक्षों की देखभाल करना, जिसमें सामान की पूर्ति तथा सेवाओं की व्यवस्था करने का कार्य भी शामिल है।

क: कार्मिक

वर्ष 1987-88 न्यास कार्यालय के कार्य संचालन का पहला वर्ष था। उस वर्ष के अंत तक कुल 35 कर्मचारियों को भर्ती किया गया था। चालू वर्ष यानी 1988-89 कार्यालय को सुदृढ़ करने का वर्ष था और न्यास की सेवा में विभिन्न स्तरों पर कुछ और अधिकारी/कर्मचारी भर्ती किए गए। नए नियुक्त कार्मिकों में शामिल थे:- विभिन्न विश्वविद्यालयों से अभ्यागत आचार्य, विभिन्न विषयों में परामर्शदाता, केन्द्र के प्रकाशनों के लिए संपादकीय कार्मिक, पुस्तकालय विशेषज्ञ, वरिष्ठ लेखा तथा प्रशासनिक कार्मिक और विभिन्न शाखाओं में नीचे के स्तर पर सहायक कर्मचारी।

ख: वित्त तथा लेखे

किसी नए संगठन के प्रशासनिक तथा वित्तीय कार्यकलापों पर लागू होने वाले नियम, विनियम और उपविधियां बनाना हमेशा ही एक महत्वपूर्ण, तत्कालकरणीय और अति कठिन कार्य होता है। वर्ष के दौरान इस दिशा में प्रयत्न जारी रहे और फिलहाल इन पर विभिन्न स्तरों पर विचार हो रहा है। छुट्टी यात्रा रियायत और बच्चों के लिए भत्ते की सुविधाएं न्यास की कार्यकारी समिति के अनुमोदन से केन्द्र के कर्मचारियों को दी गई। केन्द्र के कर्मचारियों को केन्द्रीय सरकार की स्वास्थ्य सेवा योजना की सुविधाएं देने के लिए सरकार से निवेदन किया गया। सरकार सहभागी स्वायत्त निकायों के लिए निर्धारित फीस की अदायगी पर ये सुविधाएं देने के लिए तैयार हो गई है। सूत्रधार प्रभाग ने न्यास के कर्मचारियों के लिए अंशदायी भविष्य निधि नियम बना लिए हैं और इन्हें जांच के लिए और सामान्य भविष्य निधि अधिनियम 1925 की धारा 8(2)(3) के अंतर्गत अधिसूचना जारी करने के लिए सरकार के पास भेजा जा चुका है।

केन्द्र को आय कर अधिनियम की धारा 10(23ग) (iv) के अंतर्गत निर्धारण वर्ष 1987-88 और 1988-89 के लिए आय कर से छूट मिल गई थी। वर्ष 1989-90 तथा 1990-91 के लिए ऐसी छूट देने के लिए अर्जी सरकार के विचाराधीन है।

ग: आवास

केन्द्र के कार्यकलापों को देखते हुए वर्तमान आवास सुविधाएं काफी सीमित हैं। यह फिलहाल एक अस्थायी इमारत में चल रहा है, जो पहले भारतीय वायु सेना मेस के तौर पर उपयोग में लाई जा रही थी। किंतु उपलब्ध सेवाओं के दायरे में वृद्धि करने, कर्मचारियों की संख्या में हुई वृद्धि के लिए स्थान की व्यवस्था करने और तकनीकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मौजूदा परिसर में समुचित जोड़-बदल किया गया। पुस्तकालय में शेल्फों, प्रदर्शन रैकों, काउंटरों और आधुनिक किस्म की साजसज्जा की व्यवस्था करनी पड़ी। संग्रहशाला में 50,000 पुस्तकें रखने के लिए स्थान की पर्याप्त व्यवस्था की गई। दुर्लभ ग्रंथों, मूल स्लाइडों और अन्य कीमती सामग्री को संभाल कर रखने के लिए नियंत्रित वातावरण में एक मजबूत कोठार की व्यवस्था की

गई। माइक्रोफिशों और माइक्रोफिल्मों की अनुकृतियों तथा स्लाइडों के संदर्भ और प्रसार के लिए पुस्तकालय में सुविधाओं की व्यवस्था की गई।

घ: भवन परियोजना

गत वर्ष की रिपोर्ट में कहा गया था कि भवन परियोजना के लिए एक भवन समिति गठित की गई है। अमेरिकी वास्तुविद श्री रॉल्फ लर्नर के साथ जनवरी, 1988 में एक वास्तु सेवा करार पर हस्ताक्षर किए गए। करार के उपबन्धों से उत्पन्न होने वाले वित्तीय मामलों पर कार्रवाई की गई और वास्तुविद की आय कर देनदारी का मामला करार पर हस्ताक्षर के समय वास्तुविद के साथ आदान-प्रदान किए गए पत्रों के अनुसार, केन्द्रीय प्रत्यक्ष-कर बोर्ड, विधि सलाहकार और भवन समिति से परामर्श करने के बाद, निबटा लिया गया। वास्तुविद द्वारा बैंक गारंटी प्रस्तुत करना भी एक जटिल समस्या थी, जिसने काफी समय ले लिया। वास्तुविद को तब तक अग्रिम राशि नहीं दी जा सकती थी जब तक कि वह बैंक गारंटी न दे दे और इस अपेक्षा की पूर्ति में वास्तुविद ने बहुत लंबा समय ले लिया। इस मामले में अमेरिका और भारत दोनों के बैंकों को कार्रवाई करनी थी। अंततः वास्तुविद द्वारा बैंक गारंटी दिए जाने के बाद उसे परियोजना की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अग्रिम राशि दी गई।

सेन्ट्रल विस्टा क्षेत्र में स्थित भूखंड पर 208 कर्मचारी क्वार्टरों की कतारें थीं, जिन्हें खाली कराकर तुड़वाना था। यह एक गंभीर समस्या थी। किन्तु किसी तरह इन कठिनाइयों पर भी काबू पा लिया गया और वर्ष के दौरान भूखंड खाली करा लिया गया। वहां चहारदीवारी बना दी गई है ताकि निर्माण का कार्य शुरू होने तक कोई उस पर अवैध कब्जा न कर सके। अब भवन स्थल पर केवल डॉ. राजेन्द्र प्रसाद रोड स्थित बंगला नं. 3 ही बाकी रहा है, जिसमें मुख्य सतर्कता आयुक्त का कार्यालय चल रहा है। इस कार्यालय के लिए वैकल्पिक स्थान की आवश्यकता थी। इसके लिए कठोर प्रयास किए गए। केन्द्रीय सतर्कता आयोग को उसके बदले में बीकानेर हाउस में स्थान दे दिया गया है। बीकानेर हाउस में कुछ जोड़-बदल की जाएगी और उसके बाद केन्द्रीय सतर्कता आयोग शीघ्र ही अपने नए परिसर में चला जाएगा और राजेन्द्र प्रसाद रोड पर स्थित बंगला न. 3 खाली कर देगा।

भूखंड के स्थल पर ऊपरी सतह के नीचे खोज करने का काम और प्रस्तावित भवनों के नक्शे में अनिवार्य रूप से आने वाले वृक्षों को काटने के लिए दिल्ली विकास प्राधिकरण के साथ पत्र-व्यवहार चल रहा है।

वास्तुविद ने संकल्पनात्मक योजनाओं के ऊपर काम शुरू कर दिया था और संकल्पना चरण को अंतिम रूप देने की दिशा में काफी प्रगति कर ली थी। उसकी सिफारिश पर और करार की शर्तों के अनुसार भवन समिति ने परियोजना के लिए रंगशाला परामर्शदाताओं, विशेष रंगशाला परामर्शदाताओं, ध्वनि व्यवस्था परामर्शदाता और यातायात परामर्शदाता की नियुक्ति का अनुमोदन कर दिया है। उनके करार की शर्तों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। किन्तु भवन परियोजना के लिए निर्माण प्रबंध अधिकरण के बारे में अंतिम डिजाइन तैयार करने का काम हाथ में नहीं लिया जा सका।

वित्त मंत्रालय ने महालेखा नियंत्रक और भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के परामर्श से, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की भवन परियोजना के लिए भारत के लोक लेखे के भीतर एक "जमा खाता" बनाया है। पूंजीगत कार्यों के लिए केन्द्र को दी गई राशियां इस "जमा खाते" में रखी जाती हैं, जिसमें से उतनी ही राशि निकालने की अनुमति है जितनी कि भवन परियोजना के संबंध में वास्तव में अदा करने के लिए चाहिए और अधिशेष राशि सरकार के लिए अपने नकद शेष के अंश के रूप में उपलब्ध रहती है।

संक्षेप में, दो वर्ष से भी कम की अवधि में निम्नलिखित कार्य किए गए और इन्हें अगले दशक में न केवल चालू रखा जाएगा बल्कि आगे विकसित और विस्तृत किया जाएगा:-

1. संस्था का एक संपूर्ण संकल्पनात्मक ब्लू प्रिंट (अंतिम रूपरेखा) तैयार कर लिया गया है; इसे एकल-एकल क्रम से पूर्ण किया जाएगा।
2. प्रत्येक उप संस्था के अल्पकालिक और दीर्घकालिक कार्यक्रम तैयार कर लिए गए हैं और उनमें से अधिकांश शुरू कर दिए गए हैं।

3. कला निधि का संदर्भ पुस्तकालय जिसमें 60,000 पुस्तकें हैं, जनता के लिए खोल दिया गया है।
4. कम्प्यूटर द्वारा सूची बनाने के लिए अनुसंधान और विकास के कार्यक्रम शुरू किए जा चुके हैं। पाठ्य-चित्रात्मक सामग्री के संबंध में डेटाबेस तैयार कर लिए गए हैं।
5. प्रमुख व्यक्तिगत अभिलेखागार (संग्रह) दान के रूप में अथवा अन्य रूप से प्राप्त कर लिए गए हैं।
6. फोर्ड फाउंडेशन के माध्यम से प्राप्त उपस्कर स्थापित कर दिया गया है।
7. सात प्रमुख प्रकाशनों का विमोचन किया जा चुका है।
8. पोस्टकार्डों का एक सेट प्रकाशित किया जा चुका है।
9. दो अन्तरसांस्कृतिक एवं बहुमाध्यमिक अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियां और संगोष्ठियां आयोजित की गई हैं।
10. कला विश्वकोश पर यूनेस्को द्वारा आयोजित कार्यशाला आयोजित की गई है।
11. यूनेस्को से सहायता प्राप्त हुई है और संस्था को क्षेत्रीय केन्द्र के रूप में मान्यता मिल गई है।
12. यू.एन.डी.पी. की सहायता के लिए प्रस्ताव भेजे जा चुके हैं और उन पर अनुवर्ती कार्रवाई की जाएगी।
13. जापान से सांस्कृतिक सहायता की व्यवस्था की जा चुकी है और सामान्य अनुदान सहायता के प्रस्तावों पर अनुवर्ती कार्रवाई की जा रही है।

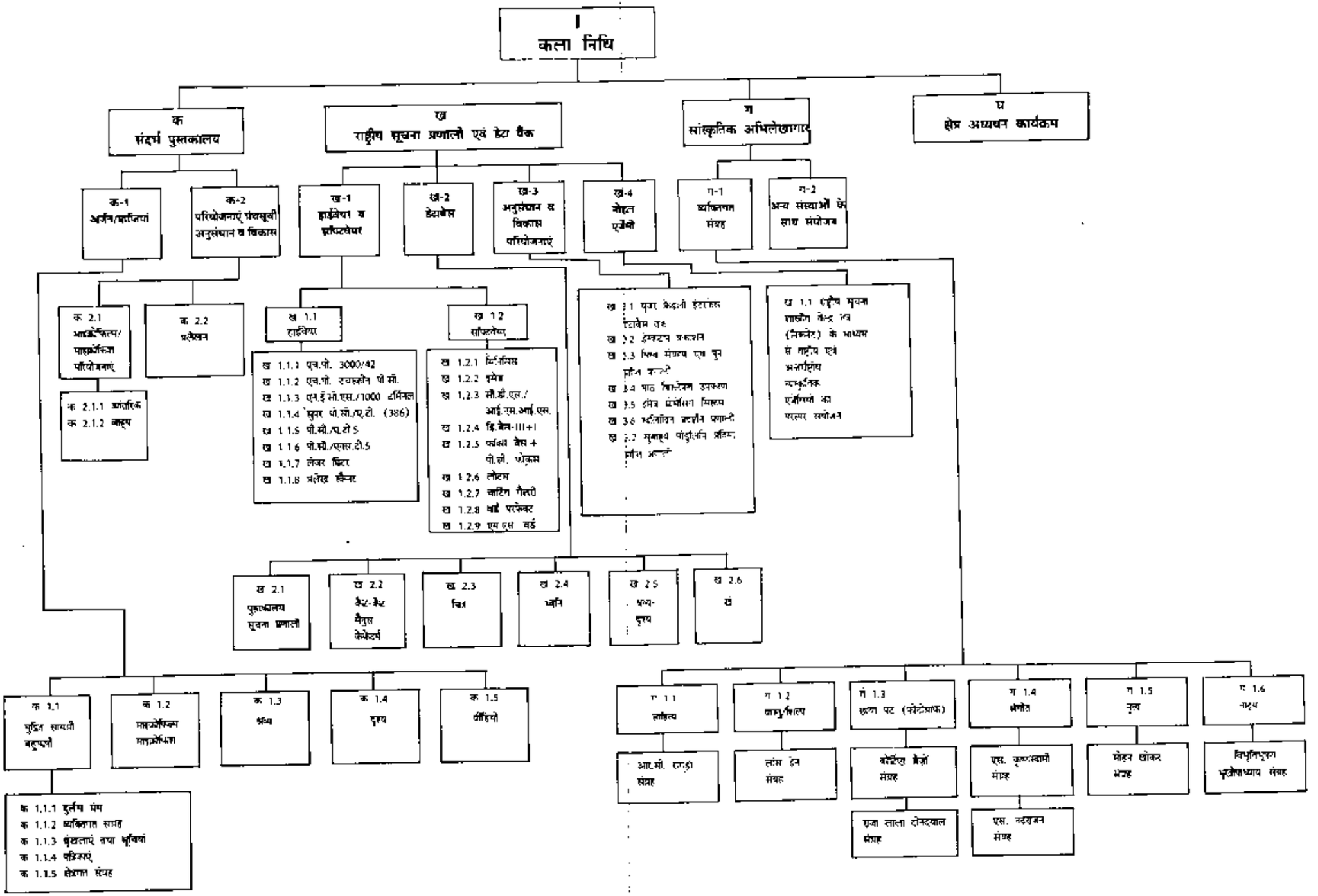

I
कला निधि
क
संदर्भ पुस्तकालय
ख
राष्ट्रीय सूचना प्रणाली एवं डेटा बैंक
ग
सांस्कृतिक अभिलेखागार
घ
क्षेत्र अध्ययन कार्यक्रम
क-1
अर्जन/प्राप्तियां
क-2
परियोजनाएं ग्रंथसूची अनुसंधान व विकास
ख-1
हार्डवेयर व सॉफ्टवेयर
ख-2
डेटाबेस
ख-3
अनुसंधान व विकास परियोजनाएं
ख-4
नोडल एजेंसी
ग-1
व्यक्तिगत संग्रह
ग-2
अन्य संस्थाओं के साथ संयोजन
क 2.1
माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश परियोजनाएं
क 2.2
प्रलेखन
क 2.1.1 आंतरिक
क 2.1.2 बाह्य
ख 1.1
हार्डवेयर
ख 1.2
सॉफ्टवेयर
ख 1.1.1 एच.पी. 3000/42
ख 1.1.2 एच.पी. रग्डलीन पी.सी.
ख 1.1.3 एम.ई.सी.एस./1000 टर्मिनल
ख 1.1.4 सुपर पी.सी./ए.टी. (386)
ख 1.1.5 पी.सी./ए.टी.S
ख 1.1.6 पी.सी./एक्स.टी.S
ख 1.1.7 लेजर प्रिंटर
ख 1.1.8 प्रलेख स्कैनर
ख 1.2.1 मिनिसिस
ख 1.2.2 इमेज
ख 1.2.3 सी.डी.एस./आई.एस.आई.एस.
ख 1.2.4 डि.बेस-III+I
ख 1.2.5 फॉक्स बेस + पी.डी. पैकेज
ख 1.2.6 लोटस
ख 1.2.7 चार्टिंग गैलरी
ख 1.2.8 वर्ड परफेक्ट
ख 1.2.9 एम.एस. वर्ड
ख 2.1
पुस्तकालय सूचना प्रणाली
ख 2.2
कैट-कैट मैनुस्क्रिप्ट कैलेंडर्स
ख 2.3
चित्र
ख 2.4
ध्वनि
ख 2.5
श्रव्य-दृश्य
ख 2.6
क 1.1
मुद्रित सामग्री बहुरूपी
क 1.2
माइक्रोफिल्म माइक्रोफिश
क 1.3
श्रव्य
क 1.4
दृश्य
क 1.5
वीडियो
क 1.1.1 दुर्लभ ग्रंथ
क 1.1.2 व्यक्तिगत संग्रह
क 1.1.3 श्रृंखलाएं तथा सूचियां
क 1.1.4 पत्रिकाएं
क 1.1.5 संस्थागत संग्रह
ग 1.1
साहित्य
ग 1.2
वास्तु/शिल्प
ग 1.3
छाया पट (फोटोग्राफ)
ग 1.4
संगीत
ग 1.5
नृत्य
ग 1.6
नाट्य
आर.सी. राय संग्रह
लांस डेन संग्रह
राजा लाला दीनदयाल संग्रह
एस. कृष्णस्वामी संग्रह
एस. नटराजन संग्रह
मोहन खोकर संग्रह

II
कला कोश
क
कलातत्त्वकोश
आधारभूत संकल्पना कोश एवं पारिभाषिक शब्दावलियां
आधारभूत संकल्पना कोश
250 पारिभाषिक शब्दों का
108 ग्रंथों में पर्यवलोकन
चुने हुए पारिभाषिक शब्दों पर निबन्धों का बहुखंडीय प्रकाशन
आधारभूत संकल्पनाओं के अंतिम खंड का संपादन एवं प्रकाशन
पारिभाषिक शब्दावलियां
ख
कलामूलशास्त्र
आधारभूत ग्रंथों का संग्रह, संपादन/अनुवाद एवं प्रकाशन
आधार 1. जैमिनीय सामवेद
2. काण्व शतपथ
3. मात्रालक्षणम्
संगीत 1. दत्तिलम्
2. बृहद्देशी
3. नर्तन निर्णय
वास्तु 1. मानसोल्लास (कर्नाटक)
2. काश्यप-शिल्प
3. मयमतम्
4. तंत्रसमुच्चय
आगम 1. ईश्वर संहिता
2. मरीचि संहिता
पुराण 1. विष्णुधर्मोत्तर (वास्तु खंड)
फारसी 1. रिसाल-ए-रागदर्पन
चरण-I
चरण II
संगीत : 1. संगीत मकरंद
2. रागविबोध
3. संगीत पारिजात
4. भरत भाष्य
5. संगीतोपनिषद् सारोद्धार
6. संगीत नारायण
वास्तु : 1. अपराजित पृच्छा (पश्चिमी)
2. लक्षणसमुच्चय (पूर्वी)
3. वास्तु विद्या (केरल)
4. साधनमाला
आगम : 1. कामिकागम, सूक्ष्मागम
2. अघोरशिवाचार्य पद्धति
3. जिनसंहिता
पुराण : 1. कालिका पुराण
ग
कला समालोचन श्रृंखला
अनुवाद एवं पुनर्मुद्रण
1. डब्ल्यू रुट्टरहाइम की एन लोगंड (जर्मन से अंग्रेजी)
2. अवलोकितेश्वर के स्तोत्र (दक्षिण-पूर्व एशिया के बौद्ध संस्करणों एवं पाठों से संस्कृत में पुनर्निर्माण
3. (सैयद हुसैन नस्र) इस्लामिक आर्ट एण्ड स्पिरिच्युअलिटी
4. (एलिस बोनर) (प्रिंसिपल ऑफ कम्पोजिशन इन हिन्दू स्कल्पचर (केव-टेंपल पीरियड)
1. (पॉल मूस) बाराबुदुर
संकलित कृतियां
ए.के. कुमारस्वामी :
प्रारंभिक खण्ड :
1. चुने हुए पत्र
2. बृहत् ग्रंथसूची
3. विद्यापति बंगीय पदावली
4. यक्ष (जल ब्रह्मांड विज्ञान पर निबन्ध)
5. व्हाट इज सिविलाइजेशन ?
आनन्द के. कुमारस्वामी के 10 से 15 तक खण्ड
घ
कला विश्वकोश
अकादमिक योजना बनाने के लिये अन्तर्राष्ट्रीय कार्य
1. मूल पारिभाषिक शब्द-कोश (संस्कृत, ग्रीक, लेटिन, अरबी, चीनी आदि)
2. परियोजना रिपोर्ट (कला विश्वकोश के खंडों की रूपरेखा)
1. मूल पारिभाषिक शब्दकोश (संस्कृत, ग्रीक, लैटिन, अरबी; चीनी, आदि)
2. परियोजना रिपोर्ट (कला विश्वकोश के खंडों की रूपरेखा

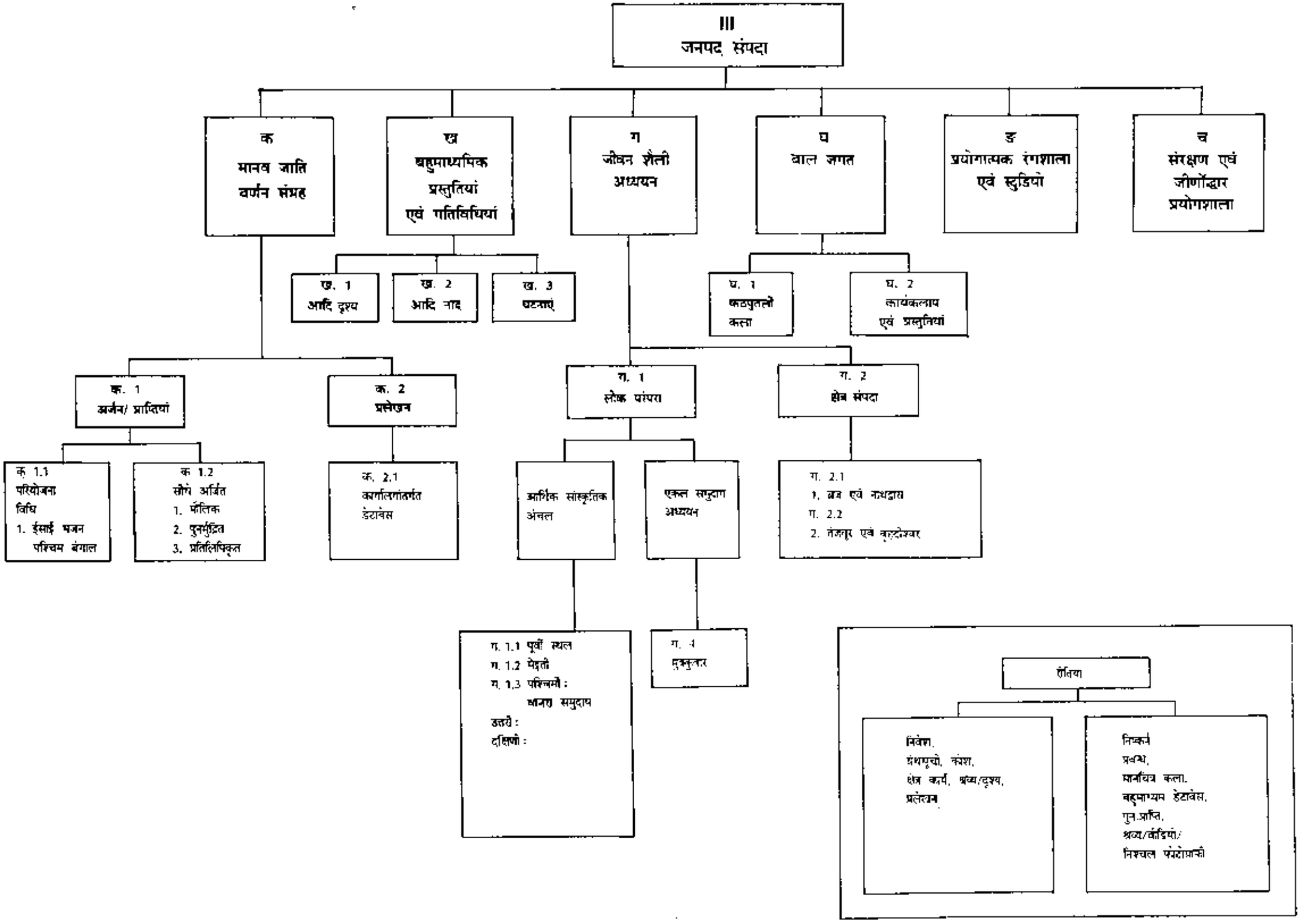

III
जनपद संपदा
क
मानव जाति
वर्णन संग्रह
ख
बहुमाध्यमिक
प्रस्तुतियां
एवं गतिविधियां
ग
जीवन शैली
अध्ययन
घ
बाल जगत
ङ
प्रयोगात्मक रंगशाला
एवं स्टुडियो
च
संरक्षण एवं
जीर्णोद्धार
प्रयोगशाला
ख. 1
आदि दृश्य
ख. 2
आदि नाद
ख. 3
घटनाएं
घ. 1
कठपुतली
कला
घ. 2
क्रियाकलाप
एवं प्रस्तुतियां
क. 1
अर्जन/ प्राप्तियां
क. 2
प्रलेखन
ग. 1
लोक परंपरा
ग. 2
क्षेत्र संपदा
क 1.1
परियोजना
विधि
1. ईसाई भजन
पश्चिम बंगाल
क 1.2
सौंगें अर्जित
1. मौलिक
2. पुनर्मुद्रित
3. प्रतिलिपिकृत
क. 2.1
कार्यालयांतर्गत
डेटाबेस
आर्थिक सांस्कृतिक
अंचल
एकल समुदाय
अध्ययन
ग. 2.1
1. ब्रज एवं नाथद्वारा
ग. 2.2
2. तंजावूर एवं वृहदेश्वर
ग. 1.1 पूर्वी स्थल
ग. 1.2 मेदती
ग. 1.3 पश्चिमी :
भानरा समुदाय
उत्तरी :
दक्षिणी :
ग. 4
गुरूकुलार
रीतियां
निवेश,
ग्रंथसूची, कोश,
क्षेत्र कार्य, श्रव्य/दृश्य,
प्रलेखन
निष्कर्ष
प्रबंध,
मानचित्र कला,
बहुमाध्यम डेटाबेस,
पुनःप्राप्ति,
श्रव्य/वीडियो/
निश्चल फोटोग्राफी

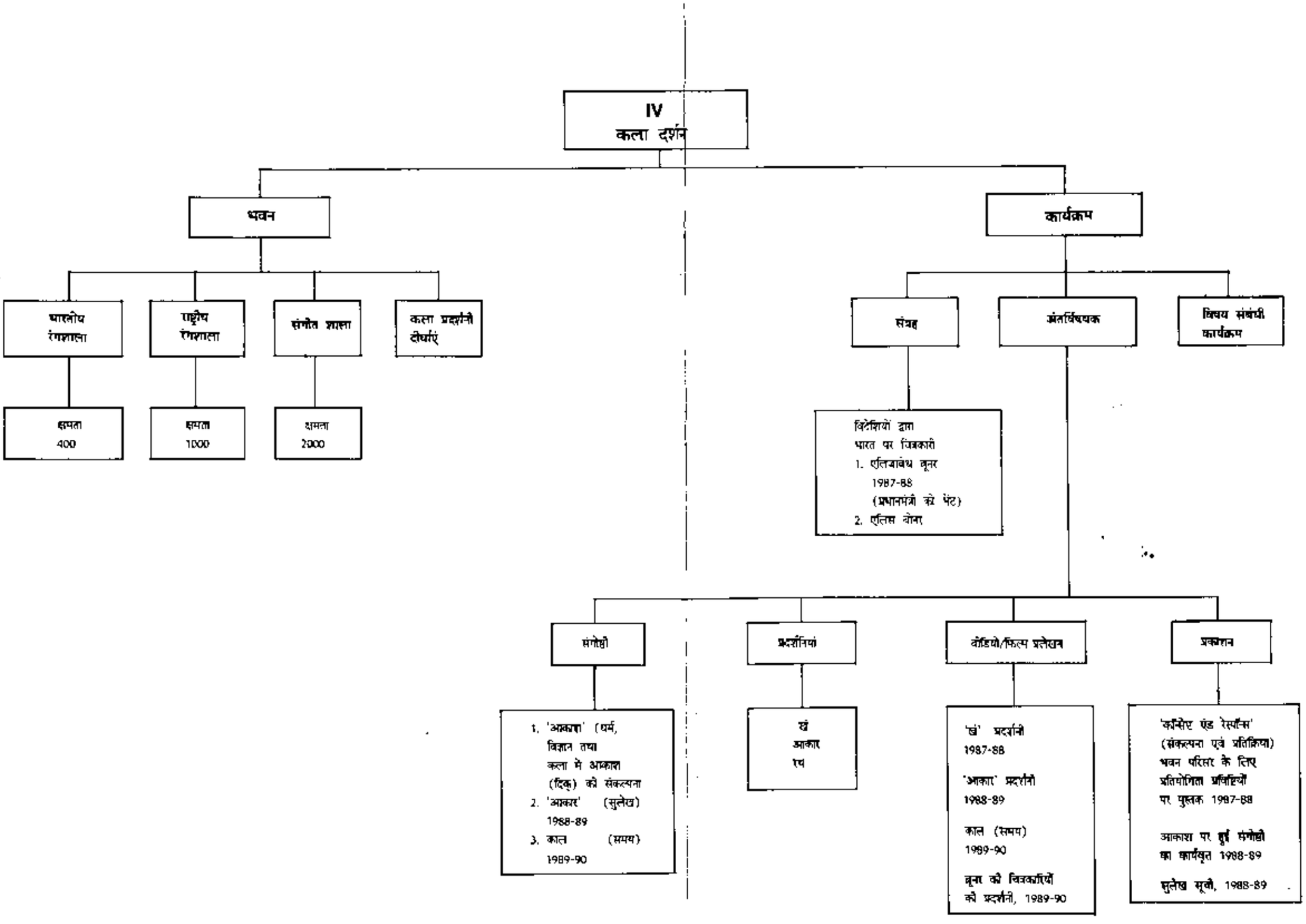

IV
कला दर्शन
भवन
भारतीय रंगशाला
राष्ट्रीय रंगशाला
संगीत शाला
कला प्रदर्शनी दीर्घाएं
क्षमता 400
क्षमता 1000
क्षमता 2000
कार्यक्रम
संग्रह
अंतर्विषयक
विषय संबंधी कार्यक्रम
विदेशियों द्वारा भारत पर चित्रकारी
1. एलिजाबेथ ब्रूनर 1987-88 (प्रधानमंत्री को भेंट)
2. एलिस बोनर
संगोष्ठी
प्रदर्शनियां
वीडियो/फिल्म प्रलेखन
प्रकाशन
1. 'आकाश' (धर्म, विज्ञान तथा कला में आकाश (दिक्) की संकल्पना
2. 'आकार' (सुलेख) 1988-89
3. काल (समय) 1989-90
खं
आकार
रुप
'खं' प्रदर्शनी 1987-88
'आकार' प्रदर्शनी 1988-89
काल (समय) 1989-90
ब्रूनर की चित्रकारियों की प्रदर्शनी, 1989-90
'कॉन्सेप्ट एंड रेस्पॉन्स' (संकल्पना एवं प्रतिक्रिया) भवन परिसर के लिए प्रतियोगिता प्रविष्टियों पर पुस्तक 1987-88
आकाश पर हुई संगोष्ठी का कार्यवृत 1988-89
सुलेख सूची, 1988-89

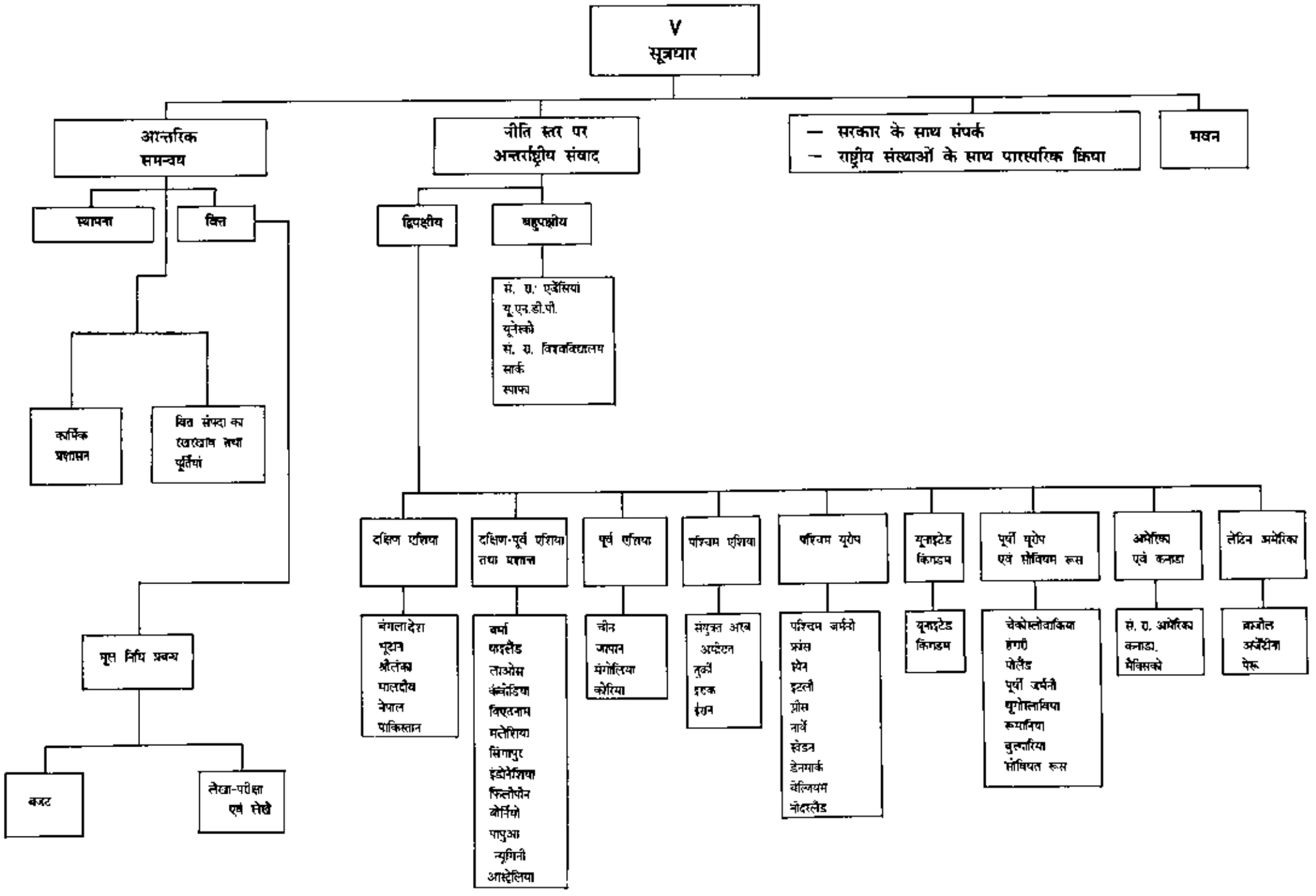

V
सूत्रधार
आन्तरिक समन्वय
नीति स्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय संवाद
— सरकार के साथ संपर्क
— राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ पारस्परिक क्रिया
भवन
स्थापना
वित्त
द्विपक्षीय
बहुपक्षीय
सं. रा.' एजेंसियां
यू.एन.डी.पी.
यूनेस्को
सं. रा. विश्वविद्यालय
सार्क
स्पाफा
कार्मिक प्रशासन
वित्त संपदा का रखरखाव तथा पूर्तियां
मूल निधि प्रबन्ध
बजट
लेखा-परीक्षा एवं लेखे
दक्षिण एशिया
दक्षिण-पूर्व एशिया तथा प्रशान्त
पूर्व एशिया
पश्चिम एशिया
पश्चिम यूरोप
यूनाइटेड किंगडम
पूर्वी यूरोप एवं सोवियत रूस
अमेरिका एवं कनाडा
लैटिन अमेरिका
बंगलादेश
भूटान
श्रीलंका
मालदीव
नेपाल
पाकिस्तान
बर्मा
थाईलैंड
लाओस
कंबोडिया
वियतनाम
मलेशिया
सिंगापुर
इंडोनेशिया
फिलीपीन
बोर्नियो
पापुआ न्यूगिनी
आस्ट्रेलिया
चीन
जापान
मंगोलिया
कोरिया
संयुक्त अरब अमीरात
तुर्की
इराक
ईरान
पश्चिम जर्मनी
फ्रांस
स्पेन
इटली
ग्रीस
नार्वे
स्वेडन
डेनमार्क
बेल्जियम
नीदरलैंड
यूनाइटेड किंगडम
चेकोस्लोवाकिया
हंगरी
पोलैंड
पूर्वी जर्मनी
यूगोस्लाविया
रूमानिया
बुल्गारिया
सोवियत रूस
सं. रा. अमेरिका
कनाडा
मैक्सिको
ब्राजील
अर्जेंटीना
पेरू

प्रबन्ध प्रणाली — विहंगम चार्ट